मुझे अपने कमरे में सोने दो न

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Mujhe Apne Kamare Mein Sone Do (Let Me Sleep in Your Room)
Cover Page picture: Snake
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

मुझे अपने कमरे में सोने दो न 5

1 राजा किन 7

2 एक शानदार राजकुमारी 22

3 सबसे अच्छी इच्छा 38

4 नौरोवे का काला बैल 52

5 नौर्वे का कत्थई भालू 63

6 सूरज के पूर्व में और चॉद के पश्चिम में 85

7 आसमान की बेटी 111

8 लोहे का चूल्हा 123

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर **2018**

मुझे अपने कमरे में सोने दो न

कितना अजीब सा शीर्षक है इस पुस्तक का – "मुझे अपने कमरे में सोने दो न"। ऐसा भला कहीं होता है क्या। कौन किसी को अपने कमरे में सोने देता है या सोने देगा।

पर ये लोक कथाऐं कुछ ऐसी ही हैं। इनमें लड़कियॉ लड़कों या फिर लड़के लड़कियों के कमरो में सोने की इजाज़त मॉगते हैं। और आश्चर्य वह उनको मिल भी जाती है। फिर वे सो भी जाते हैं।

पर ऐसा क्यों होता है कैसे होता है किसलिये होता है यह जानने के लिये तो तुम लोगों को ये कहानियॉ खुद ही पढ़नी पड़ेंगी। तो चलो आओ शुरू करते हैं यह कहानी संग्रह जिसमे लोग किसी के कमरे में सोने की इजाज़त मॉगते हैं।

1 राजा किन[1]

कमरे में सोने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक राजा था जो एक सूअर के बच्चे को अपने बेटे की तरह मानता था। उसका नाम भी उसने राजा किन रखा हुआ था।

राजा किन महल में सब जगह घूमता रहता था और अक्सर ठीक से ही रहता था जैसे वह किसी शाही परिवार में जन्मा हो। हॉ कभी कभी उससे कुछ गड़बड़ जरूर हो जाती थी।

एक बार ऐसे ही एक मौके पर उसके पिता यानी राजा ने उसकी पीठ सहलाते हुए उससे कहा — "क्या बात है बेटा, तुम आज कल गड़बड़ क्यों कर रहे हो?"

राजा किन बोला — "ओयिंक ओयिंक। मुझे एक पत्नी चाहिये। ओयिंक ओयिंक। मुझे बेकर[2] की बेटी चाहिये।"

[1] King Krin (Story No 19) – a folktale from Colline del Po, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[2] Almost all western people eat their bread baked in oven. The person who makes such bread is called baker, although he bakes many other things too, such as biscuits, cookies, cake, buns etc etc…

राजा ने अपने बेक करने वाले को बुलाया। उस बेकर के तीन बेटियॉ थीं। राजा ने उससे पूछा — "मेरा बेटा राजा किन तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी से शादी करना चाहता है। क्या तुम्हारी सबसे बड़ी बेटी मेरे सूअर बेटे से शादी करने के लिये तैयार है?"

बेकर तो यह सुन कर बड़े पशोपेश में पड़ गया। एक तरफ तो वह बहुत खुश था कि उसकी बेटी की शादी एक राजा के बेटे से हो रही थी पर दूसरी तरफ बहुत दुखी था कि उसकी बेटी की शादी एक सूअर से हो रही थी। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे और क्या करे।

वह राजा को मना भी नहीं कर सकता था सो उस समय तो उसने राजा से कहा — "राजा साहब मैं अपनी बेटी से पूछ लूँ।" यह कह कर वह अपने घर चला आया।

पर जब उसने यह सब अपनी सबसे बड़ी बेटी को बताया तो उसने यह तय कर लिया कि वह उस सूअर से शादी कर लेगी।

बेकर की बेटी से उसकी शादी हो रही थी यह सुन कर तो राजा किन के रोंगटे खड़े हो गये। वह बहुत खुश हो गया। अपनी शादी वाली रात को वह सारे शहर में जा कर बहुत खुश खुश चक्कर काट कर आया और अपने शरीर में कीचड़ भी खूब अच्छी तरह लपेट कर आया।

लौट कर वह अपनी पत्नी के कमरे में आया जहॉ उसकी पत्नी उसका इन्तजार कर रही थी। अपनी पत्नी को सहलाने के इरादे से

राजा किन ने अपने शरीर को अपनी पत्नी की स्कर्ट[3] से कई बार मला।

इससे उसकी पत्नी की सारी स्कर्ट कीचड़ से लथपथ हो गयी। यह देख कर उसकी पत्नी का मन खराब हो गया। उसने राजा किन को पलट कर सहलाने की बजाय पैर से मारा और बोली — "ओ गन्दे सूअर, चले जाओ यहाँ से। तुमने तो मेरी सारी स्कर्ट ही खराब कर दी।"

राजा किन बोला — "तुमने मेरा अपमान किया है तुमको इसकी सजा भुगतनी पडेगी।" यह कह कर बेचारा राजा किन वहाँ से चला गया।

उस रात बेकर की बेटी अपने बिस्तर में मरी पायी गयी। यह खबर सुन कर राजा बहुत दुखी हुआ। पर वह क्या करता।

फिर कुछ दिन बीत गये। अब उसका बेटा फिर से गड़बड़ करने लगा था। राजा ने उससे फिर पूछा — "बेटे अब तुम्हें क्या चाहिये।"

तो उसने फिर वही कहा — "ओयिंक, ओयिंक, मुझे एक पत्नी चाहिये। पर अबकी बार मुझे बेकर की दूसरी बेटी चाहिये।"

राजा दुखी मन से बोला — "पर उसकी एक बेटी तो मर चुकी है वह तुमको अपनी दूसरी बेटी क्यों देगा।"

---

[3] Skirt is a dress worn with blouse under waist and normally is of knee length but can be of different lengths, even upto heel also – see its picture above.

"मुझे नहीं मालूम पर मुझे तो वही चाहिये।"

राजा ने फिर अपने बेकर को बुलाया और उससे पूछा कि क्या वह अपनी दूसरी बेटी की शादी उसके बेटे से करना पसन्द करेगा? बेकर बेचारा क्या जवाब देता। वह तो अभी तक अपनी पहली बेटी के दुख से ही नहीं उभर पाया था।

उसने राजा को फिर वही जवाब दिया — "मैं अपनी बेटी से पूछ लूँ सरकार।" पर जब उसने अपनी दूसरी बेटी से पूछा तो आश्चर्य की बात कि वह भी उससे शादी करने के लिये राजी हो गयी।

शादी वाले दिन राजा किन ने अपनी दूसरी पत्नी के साथ भी वैसा ही किया जैसा उसने अपनी पहली शादी वाले दिन अपनी पहली पत्नी के साथ किया था।

उस रात को भी वह सारे शहर में जा कर खुश खुश चक्कर काट कर आया और अपने शरीर में कीचड़ भी खूब अच्छी तरह लपेट कर आया।

जब वह कीचड़ में सना अपनी पत्नी के पास आया और उसकी स्कर्ट से अपना शरीर मला तो उसने भी वही कहा — "उफ़, ओ गन्दे सूअर। चले जाओ यहाँ से। तुमने तो मेरी सारी स्कर्ट ही खराब कर दी।"

यह सुन कर राजा किन ने उससे भी यही कहा — "तुमने मेरा अपमान किया है तुमको इसका फल भुगतना पड़ेगा।" और अगले दिन बेकर की दूसरी बेटी भी अपने बिस्तर में मरी पायी गयी।

राजा यह सब देख कर बहुत दुखी हुआ पर कर कुछ नहीं सका। वह बेकर से बहुत शरमिन्दा था।

फिर कुछ समय निकल गया। राजा किन ने फिर गड़बड़ शुरू की तो उसके पिता राजा ने उससे पूछा — "अब तुम्हें क्या चाहिये राजा किन?"

"मुझे एक पत्नी चाहिये और वह भी बेकर की तीसरी बेटी।"

राजा कुछ गुस्से से बोला — "क्या तुम्हारे अन्दर अभी भी इतनी हिम्मत है कि तुम उस बेकर की तीसरी बेटी को अपनी पत्नी बनाने के लिये मॉगो?"

"ओयिंक ओयिंक, मैं जरूर मॉगूँगा। मुझे वह चाहिये।"

सो बेकर की तीसरी सबसे छोटी वाली बेटी को बुलवाया गया और उससे पूछा गया कि क्या वह राजा के सूअर बेटे से शादी करने के लिये तैयार थी। आश्चर्य कि बेकर की वह बेटी भी खुशी से उस सूअर से शादी करने के लिये तैयार हो गयी।

शादी के दिन फिर राजा किन फिर पहले की तरह से सारे शहर का चक्कर काट कर आया और कीचड़ में लिपट कर अपनी पत्नी के कमरे में घुसा। पहले की तरह से ही उसने उसको सहलाने के लिये अपना शरीर अपनी पत्नी की स्कर्ट से मला।

पर इस लड़की ने उसको दुतकारा नहीं, वह उससे गुस्सा भी नहीं हुई बल्कि बदले में उसकी कीचड़ को अपने रूमाल से पोंछा और बोली — "मेरे सुन्दर किन, मैं तुमको बहुत प्यार करती हूँ।" राजा किन तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया।

अगली सुबह जब सब लोग यह सोच रहे थे कि उनको फिर से एक लाश देखने को मिलेगी पर वहाँ तो कुछ और ही निकला। बेकर की तीसरी बेटी तो बहुत खुश खुश बाहर आयी।

यह देख कर तो सभी लोग बहुत खुश हो गये और बेकर तो बहुत ही खुश हो गया क्योंकि सबसे ज़्यादा दुखी तो वही था जिसने इस शादी की वजह से अपनी दो बेटियों खो दी थीं। अब कम से कम उसकी एक बेटी तो ज़िन्दा थी और वह भी राज घराने की बहू के रूप में।

राज्य भर में खूब खुशियाँ मनायी गयीं। राजा ने भी अपने बेटे की शादी की खुशी में खूब बड़ी दावत दी।

बेकर की लड़की को राजा किन के बारे में कुछ शक था सो अगली रात उसको उत्सुकता हुई कि वह राजा किन को देखे। सो उस समय जब वह सो रहा था तो उसने एक मोमबत्ती जलायी और उसको देखने चली।

वहाँ जा कर उसने देखा तो वहाँ तो राजा किन की बजाय एक बहुत ही सुन्दर नौजवान लेटा हुआ था। पर जब वह अपने हाथ में मोमबत्ती ले कर उसको देख रही थी तो उसकी मोमबत्ती के मोम की

एक बूँद पिघल कर उस नौजवान की बाँह पर गिर पड़ी। इससे वह नौजवान चौंक कर उठ पड़ा और बहुत गुस्सा हुआ।

वह बोला — "तुमने मेरा जादू तोड़ दिया इसलिये अब तुम मुझे कभी नहीं देख पाओगी।

तुम अब मुझे तभी देख पाओगी जब तुम मुझे ढूँढते ढूँढते सात बोतल आँसू बहाओगी, सात लोहे के जूते तोड़ोगी, सात लोहे की मैन्टिल्स[4] और सात लोहे के टोप तोड़ोगी।" यह कह कर वह वहाँ से गायब हो गया।

यह सब देख कर वह लड़की बहुत दुखी हो गयी और इतनी दुखी हुई कि उसके पास उसको ढूँढने के सिवा और कोई रास्ता नहीं बचा।

वह एक लोहार के पास गयी और उसने उससे सात जोड़ी लोहे के जूते, सात लोहे के मैन्टिल्स और सात लोहे के टोप बनवाये और उनको ले कर अपने पति को ढूँढने चल दी।

वह दिन भर रोती रही और चलती रही जब तक रात नहीं हो गयी। जब रात हुई तो वह एक पहाड़ पर थी। रात को ठहरने के लिये उसने वहाँ कोई जगह ढूँढने की कोशिश की तो उसको एक मकान मिल गया। उसने उस मकान का दरवाजा खटखटाया तो एक बुढ़िया ने उसका दरवाजा खोला।

[4] Mantel is a cloak type garment worn over the clothes. Here it is made of iron – see its picture above.

एक लड़की को सामने खड़ा देख कर बोली — "ओ बेचारी लड़की, अफसोस मैं तुमको यहॉ शरण नहीं दे सकती क्योंकि मेरा बेटा हवा है। वह जब शाम को आता है तो वह घर की सारी चीज़ें उलट पलट कर देता है। जो भी उसके रास्ते में आता है वह उन सबको मिटा देता है।"

वह लड़की उससे प्रार्थना करने लगी कि वह किसी तरह से रात भर के लिये उसको वहॉ रुकने दे सुबह होते ही वह वहॉ से चली जायेगी पर इस समय वह कहॉ जायेगी। सो वह बुढ़िया उस पर दया करके उसको घर के अन्दर ले गयी।

थोड़ी देर बाद उस बुढ़िया का बेटा हवा आ गया और आते ही बोला — "आदमी, आदमी, मुझे आदमी की बू आ रही है। कहॉ है आदमी?" पर उसकी मॉ ने उसको खाना खिला कर शान्त किया।

सुबह को हवा की मॉ बहुत तड़के ही उठी और लड़की को उठाया और बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा जागे तुम यहॉ से चली जाओ और यह चेस्टनट[5] लेती जाओ। यह मेरी तरफ से तुमको एक भेंट है। जब भी तुम किसी मुश्किल में पड़ जाओ तो इसको तोड़ लेना।"

[5] Chestnut is a kind of nut like walnut, groundnut (peanut), pistachio etc nuts. People eat this nut dry roasted on fire like the ear of corn (Bhuttaa), or in a hot pan on fire, or in an oven – see its picture above.

लड़की ने वह चेस्टनट लिया, हवा की मॉ को धन्यवाद दिया और अपने सफर पर चल दी। अगली रात होते होते वह एक दूसरे पहाड़ पर आ गयी। वहॉ भी उसको एक मकान मिल गया। वह उस मकान तक गयी और उसका दरवाजा खटखटाया।

वहॉ भी एक बुढ़िया ने ही उस मकान का दरवाजा खोला और बोली — "बेटी, मैं तुमको अपने घर में रख लेती पर मैं बिजली की मॉ हूॅ। ओह तुम बेचारी। अगर मेरा बेटा बिजली आ गया और उसने तुमको पकड़ लिया तो?"

लड़की ने उससे भी बहुत प्रार्थना की कि वह उसको केवल रात भर के लिये ठहरने की जगह दे दे इस रात में वह अकेली कहॉ जायेगी तो उसको उस लड़की पर दया आ गयी और वह भी उसको घर के अन्दर ले गयी।

जब बिजली घर लौटा तो उसने इधर उधर कुछ सूॅघा और बोला — "आदमी? यह आदमी की बू कहॉ से आ रही है?" पर काफी ढूॅढने पर भी वह उस लड़की को न पा सका। सो अपना खाना खाने के बाद वह सोने चला गया।

बिजली की मॉ भी सुबह सवेरे तड़के ही उठी और उस लड़की को जगा कर उससे बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा जागे तुम यहॉ से चली जाओ और मेरी तरफ से यह अखरोट[6] लेती

[6] Walnut – a kind of nut like almond, pistachio, groundnut (peanut) etc – see its picture above.

जाओ तुम्हारे काम आयेगा। जब कभी तुम किसी भारी मुसीबत में हो तो इसको तोड़ लेना।"

लड़की ने उससे वह अखरोट ले लिया, उसको धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दी। वह फिर सारा दिन चलती रही और जब रात हुई तो अब वह एक तीसरे पहाड़ पर थी। यहाँ भी उसको एक मकान दिखायी दे गया। यह गरज का मकान था।

मकान देख कर उसने वहाँ भी उस मकान का दरवाजा खटखटाया तो वहाँ भी एक बुढ़िया ने उसका दरवाजा खोला। उसने भी अपने बेटे की वजह से उसको रात को शरण देने से मना कर दिया। पर फिर वह भी इस लड़की के काफी प्रार्थना करने के बाद उसको अन्दर ले आयी और रात भर के लिये उसे शरण दी।

शाम को जब गरज आया तो उसको भी अपने घर में आदमी की बू आयी पर ढूँढने पर भी जब उसको कोई आदमी नहीं दिखायी दिया तो वह भी खाना खा कर सोने चला गया।

सुबह को गरज की माँ भी तड़के ही उठी और उस लड़की को जगा कर बोली — "इससे पहले कि मेरा बेटा उठे तुम यहाँ से चली जाओ और मेरी तरफ से यह हैज़लनट[7] लेती जाओ। जब किसी मुसीबत में फँस जाओ तो इसको तोड़ लेना।"

[7] Hazel nut is a kind of nut like chestnut, walnut, ground nut (peanut) etc – see its picture above.

लड़की ने उस बुढ़िया से वह हैज़लनट लिया, उसे धन्यवाद दिया और फिर अपने सफर पर चल दी। वह मीलों चलती रही और चलते चलते एक शहर में आ गयी।

वहॉ आ कर उसने सुना कि वहॉ की राजकुमारी की शादी एक सुन्दर नौजवान से होने वाली थी जो उसी राजकुमारी के किले में रहता था। इस लड़की को कुछ ऐसा लगा कि यही उसका पति था सो उसको इस शादी को रोकने के लिये कुछ करना था, पर वह क्या करे? वह किले में अन्दर कैसे घुसे?

उसको चैस्टनट की याद आयी तो उसने वह चैस्टनट निकाल कर तोड़ दिया। उसके अन्दर से बहुत सारे हीरे जवाहरात निकल कर नीचे बिखर गये।

उसने वे सब हीरे जवाहरात बटोरे और उनको ले कर राजकुमारी के महल की खिड़की को नीचे बेचने के लिये ले गयी और आवाज लगाने लगी — "हीरे जवाहरात ले लो। बहुत सुन्दर हीरे जवाहरात ले लो।"

राजकुमारी ने अपनी खिड़की से नीचे झॉका तो एक लड़की को हीरे जवाहरात बेचते पाया। उसने उस लड़की को अपने महल में बुला लिया और उससे उन हीरे जवाहरातों की कीमत पूछी।

लड़की बोली — "मैं ये सारे हीरे जवाहरात आपको मुफ्त दे दूँगी अगर आप मुझको अपने महल में ठहरे हुए नौजवान के सोने के कमरे में एक रात गुजारने की इजाज़त दे दें तो।"

यह सुन कर राजकुमारी डर गयी कि शायद यह लड़की उसके होने वाले पति से बात करे और उसको वहाँ से भगाने की कोशिश करे।

पर उसकी दासी ने कहा — "आप यह सब मेरे ऊपर छोड़ दीजिये। हम उस नौजवान को सोने वाली दवा खिला देंगे और वह रात भर सोता ही रहेगा, उठेगा ही नहीं। तो ऐसी हालत में यह कर ही क्या सकती है?"

सो उन्होंने यही किया। जब वह नौजवान सोने गया तो दासी ने उसको खाने के साथ सोने वाली दवा खिला दी और वह जा कर गहरी नींद सो गया।

दासी रात को उस लड़की को भी उस नौजवान के कमरे में छोड़ आयी। वहाँ जा कर लड़की ने देखा कि वह तो और कोई नहीं उसका अपना पति ही था। उसको देख कर वह बहुत खुश हुई कि उसको उसका खोया हुआ पति मिल गया।

कुछ रात बीतने पर वह उसके पास गयी और उसको जगाने लगी — "उठो देखो, मैं तुम्हारे लिये कितनी दूर चल कर आयी हूँ। मेरे सात लोहे के जूते फट गये हैं। सात लोहे के मैन्टिल्स और सात लोहे के टोप भी टूट गये हैं। मैंने सात बोतल आँसू भी बहाये हैं। इस सबके बाद ही मैंने तुम्हें देखा है। उठो, उठो।"

वह सुबह तक उसको उठाती रही पर राजकुमार तो उस सोने वाली दवा के असर से ऐसा सोया ऐसा सोया कि उसकी तो ऑख ही नहीं खुली।

जब लड़की का धीरज छूट गया तो सुबह उसने अखरोट तोड़ दिया। उस अखरोट में से एक के बाद एक सिल्क और कई तरह के कपड़ों के सुन्दर सुन्दर गाउन निकलने लगे। हर नया गाउन[8] उससे पहले वाले गाउन से कहीं ज़्यादा सुन्दर और कीमती होता।

जब दासी सुबह आयी तो वह तो यह तमाशा देख कर हक्का बक्का रह गयी कि उस लड़की के चारों तरफ गाउन ही गाउन बिखरे पड़े हैं। वह तुरन्त भागी भागी राजकुमारी के पास गयी और जा कर उसे सब बताया।

राजकुमारी भी यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी और वह भी तुरन्त दौड़ी दौड़ी दासी के पीछे पीछे वहॉ आयी जहॉ उस लड़की ने अपने चारों तरफ इतने सारे गाउन फैला रखे थे। उन सब गाउन को देख कर उसका मन ललचा गया और उसने उस लड़की से उन सब गाउन की कीमत पूछी।

[8] Gown is a long heel-length robe made of expensive cloth and richly decorated or embroidered normally for party purposes – see its picture above.

लड़की ने फिर वही शर्त रखी कि अगर वह उसको उस नौजवान के कमरे में एक रात और सोने देगी तो वह वे सारे गाउन उसको मुफ्त दे देगी।

इस बार भी राजकुमारी ने दासी के कहने पर उस लड़की को उस नौजवान के कमरे में सोने भेज दिया। और इस बार भी उन्होंने उस नौजवान को बेहोशी की दवा खिला कर सुला दिया।

पर इस बार उस लड़की को देर से उसके कमरे में ले जाया गया और जल्दी ही निकाल लाया गया सो उसकी यह दूसरी रात भी बेकार गयी और वह उसको न उठा सकी।

अब उस लड़की के पास केवल एक ही गिरी बची थी – हैज़लनट। कोई और चारा न देख कर उसने उस गिरी को भी तोड़ दिया। उस गिरी में से बहुत सारे घोड़े गाड़ियॉ निकल पड़े।

राजकुमारी ने उनको लेने के लिये जब उनकी कीमत पूछी तो उस लड़की ने उनकी भी वही कीमत मॉगी कि वह उसको अगर उस नौजवान के कमरे में एक रात सोने दे तो वह उन सबको उसको मुफ्त ही दे देगी। राजकुमारी फिर राजी हो गयी।

राजा दो रात से कुछ अजीब सा महसूस कर रहा था सो उसको लगा कि उसके खाने में कुछ था जिसकी वजह से उसको ऐसा महसूस हो रहा था सो उस दिन भी राजकुमार को जब खाने के बाद वह दवा दी गयी तो राजकुमार ने उसको खाने का बहाना तो किया पर उनकी निगाह बचते ही फेंक दिया और जा कर सो गया।

रात को जब उस लड़की ने उससे फिर से बात की तो वह तुरन्त ही उठ गया। उसने देखा कि वहॉ तो उसकी पत्नी बैठी थी। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गया।

उन घोड़ों और गाड़ियों के साथ उन दोनों को वहॉ से भागने में कोई परेशानी नहीं हुई। वे लोग अपने घर पहुॅच गये और घर में खूब खुशियॉ मनायी गयीं।

2 एक शानदार राजकुमारी[9]

कमरे में सोने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली जा रही है।

बहुत समय के बाद आज यह कहानी फिर से कही जा रही है कि एक राजा था जिसकी एक बेटी थी जो शादी के लायक थी। वह लड़की बहुत सुन्दर थी।

एक दिन राजा ने उसको बुलाया और उससे कहा — "बेटी अब तुम्हारी उम्र शादी के लायक हो गयी है इसलिये अब तुमको शादी कर लेनी चाहिये।

मैं अपने सभी साथी राजाओं और दोस्तों को यह खबर भिजवा देता हूँ कि फलॉ दिन एक बड़ा जश्न मनाया जायेगा और वे सब उसमें जरूर आयें। जब वे सब यहॉ आ जायेंगे तो तुमको उनमें से अपनी पसन्द का दुलहा चुनने का मौका मिल जायेगा।"

बेटी ने हॉ कर दी और राजा ने यह सन्देश सबको भिजवा दिया। तय किया हुआ दिन भी आ पहुँचा। सारे राजा उस दिन वहॉ आ पहुँचे थे। उन सबके परिवार भी वहॉ आये थे।

[9] The Mincing Princess (Story No 94) – a folktale from Italy from its Province of Trapani.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

जो भी राजा और राजकुमार वहॉ आये थे राजकुमारी ने उनमें से राजा गारनर[10] के बेटे को पसन्द किया। सब लोगों ने बहुत खुशियॉ मनायीं।

दोपहर हुई तो सब लोग खाना खाने बैठे। खाने में **57** चीज़ें बनी थीं। मीठे में अनार भी परोसे गये। अब अनार हर देश में तो मिलते नहीं और राजा गारनर के देश में तो उनका नाम भी कोई नहीं जानता था सो राजकुमार ने जब अनार उठाया तो उसका एक दाना नीचे गिर पड़ा।

यह सोच कर कि वह दाना बहुत कीमती होगा वह उसको उठाने के लिये नीचे झुका। उधर राजकुमारी राजकुमार पर से अपनी नजर ही नहीं हटा पा रही थी सो उसने यह देख लिया कि राजकुमार नीचे से अनार का एक दाना उठाने की कोशिश कर रहा था।

उसको गुस्सा आ गया और वह गुस्से में भर कर मेज से उठी और अन्दर चली गयी। अपने कमरे में जा कर उसे अन्दर से बन्द करके बैठ गयी।

[10] King Garner

उसका पिता उसके पीछे पीछे यह देखने के लिये गया कि उसकी बेटी को क्या हो गया है। वह वहॉ गया तो उसने देखा कि उसकी बेटी तो अपने कमरे में बैठी रो रही है।

राजा ने अपनी बेटी के रोने की वजह जाननी चाही तो वह बोली — "पिता जी, मैं उस लड़के को बहुत पसन्द करती हूँ पर मुझे अब लगा कि वह तो बहुत ही छोटे दिमाग का आदमी है और अब मैं उसके साथ कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती।"

राजा खाने की जगह वापस आया। सब राजाओं को धन्यवाद दिया और उनको गुड बाई कह कर विदा कर दिया। पर यह बात राजा गारनर के बेटे के लिये कुछ ज़रा ज़्यादा ही हो गयी सो उसने राजकुमारी को सबक सिखाने की कुछ और तरकीब सोची।

बाकी सारे राजा तो वहॉ से अपने अपने घर चले गये पर राजा गारनर का बेटा महल से जाने के बाद अपने घर नहीं गया। असल में वह भी राजकुमारी को बहुत पसन्द करने लगा था। वह उसको किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहता था सो उसने एक तरकीब सोची।

बाहर निकल कर उसने एक किसान का वेश रखा और काम की तलाश में महल के आस पास चक्कर काटने लगा। राजा को एक माली की जरूरत थी और क्योंकि वह राजकुमार बागीचों के बारे में कुछ जानता था सो उसने राजा से प्रार्थना की वह उसको अपने बागीचे में माली का काम दे दे।

राजा को वह लड़का पसन्द आ गया सो उसके बारे में कुछ जानकारी हासिल करने के बाद उसकी तनख्वाह निश्चित कर दी गयी और उसे नौकरी पर रख लिया गया।

बागीचे में ही उसको एक छोटा सा मकान दे दिया गया और वह अपने एक बक्से के साथ उस मकान में चला गया।

राजकुमार के बक्से में उसकी वह भेटें थीं जो वह अपनी होने वाली पत्नी के लिये ले कर आया था पर अब जब राजकुमारी ने उसको स्वीकार ही नहीं किया तो वे सब भेंटें अभी उसी के पास थीं।

जब वह अपना बक्सा ले कर उस मकान में आया तो उसने यही दिखाया कि उस बक्से में उसके पहनने के कपड़े थे। उस मकान में पहुँच कर उसने अपने मकान की खिड़की के सामने एक शाल टॉग लिया जो सुनहरे तारों की कढ़ाई से कढ़ा हुआ था।

राजकुमारी के महल की खिड़की बागीचे की तरफ खुलती थी और उसी बागीचे में वह माली रहता था। सो एक दिन जब उसने अपनी खिड़की से बागीचे में झॉका तो उसको माली के घर की खिड़की पर टॅगा वह सोने के तारों से कढ़ाई किया गया शाल दिखायी दे गया।

उसने माली को बुलाया और उससे पूछा — "यह जो शाल तुम्हारी खिड़की पर फैला हुआ है किसका है?"

माली बोला — "राजकुमारी जी, यह शाल मेरा है।"

राजकुमारी ने उससे फिर पूछा — "क्या तुम इस शाल को मुझे बेचोगे? मैं तुम्हारा यह शाल खरीदना चाहती हूँ।"

माली बोला — "ओह नहीं, कभी नहीं। यह शाल बेचने के लिये नहीं है।" कह कर वह वहाँ से चला गया।

यह सुन कर राजकुमारी ने अपनी दासियों से कहा कि वे उस माली को वह शाल उसे बेचने पर मनायें।

दासियों ने माली को उस शाल के बदले में कितने भी पैसे देने के लिये कहा। यहाँ तक कि उसको अगर पैसा नहीं चाहिये तो उस के बराबर की कीमत की कोई और चीज़ लेने के लिये भी कहा पर किसी का कोई नतीजा नहीं निकला क्योंकि वह तो उस शाल को किसी भी कीमत पर बेचने को तैयार ही नहीं था।

जब उसको बहुत कहा गया तो वह बोला — "मैं यह शाल बेचता तो नहीं, हाँ उनको यह शाल मैं भेंट कर सकता हूँ अगर वह मुझको अपने महल के पहले कमरे में सोने दें तो।"

यह सुन कर वे दासियाँ बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं और यह बात राजकुमारी से कहने के लिये दौड़ गयीं। राजकुमारी से बात करते समय वे कह रही थीं कि वह अगर इतना ही बेवकूफ है जो आपके महल के पहले कमरे में सोना चाहता है तो उसे सोने दीजिये। कोई अक्लमन्द आदमी ऐसा क्यों करेगा। वह जरूर ही कोई बेवकूफ है।

और फिर इसके लिये तो हमको कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। इसमें हमारा कुछ नुकसान भी नहीं होगा और आपको शाल भी मिल जायेगा। सो राजकुमारी राजी हो गयी।

जब सारा घर सो रहा था तो राजकुमारी की दासियॉ उस माली को राजकुमारी के महल के अन्दर ले गयीं और उसके महल के पहले कमरे में उसको सोने के लिये छोड़ गयीं।

अगले दिन उन्होंने माली को सुबह सवेरे जल्दी उठाया और उसको महल के बाहर छोड़ आयीं। इसके बदले में माली ने अपना शाल राजकुमारी को दे दिया।

एक हफ्ते बाद उस माली ने एक और शाल उस खिड़की पर टॉग दिया। यह शाल उस पहले वाले शाल से भी ज़्यादा खूबसूरत था। जब राजकुमारी ने यह शाल देखा तो वह अपनी दासियों से बोली — "मुझे तो यह शाल चाहिये।"

जब माली से इस शाल को राजकुमारी को बेचने के बारे में बात की गयी तो माली बोला कि में इस शाल को बेचता तो नहीं पर अगर राजकुमारी जी मुझे अपने महल के दूसरे कमरे में एक रात सोने की इजाज़त दें तो मैं उनको यह शाल भेंट कर सकता हूॅ।"

राजकुमारी की दासियों ने राजकुमारी से कहा — "जब आपने उसको अपने महल के पहले कमरे में सोने दिया तो अब आप उसको अपने महल के दूसरे कमरे में भी सोने दे सकती हैं।"

सो अगले दिन माली राजकुमारी के महल के दूसरे कमरे में सो गया और इसके बदले में उसने उसको अपना वह दूसरा शाल दे दिया।

फिर एक हफ्ता गुजर गया। तीसरे हफ्ते माली ने सोने के तारों से कढ़ी हुई और हीरे मोती से सजी हुई एक बहुत ही खूबसूरत पोशाक अपनी खिड़की पर टॉग दी।

जब राजकुमारी ने अपनी खिड़की से उस पोशाक को माली के घर की खिड़की पर टॅगा देखा तो उससे रहा नहीं गया। माली से उसकी कीमत पूछने पर उसने कहा कि यह पोशाक तो बिल्कुल भी बिकाऊ नहीं थी।

पर काफी कुछ कहने सुनने के बाद माली ने कहा कि वह उसको भी बेचेगा तो कभी नहीं पर वह उसको राजकुमारी को भेंट दे सकता है अगर राजकुमारी उसको अपने महल के तीसरे कमरे में सोने की इजाज़त दे तो। तीसरा कमरा यानी राजकुमारी के सोने के कमरे के बिल्कुल बराबर वाला कमरा।

राजकुमारी ने सोचा "इसमें इतना डरना किस बात का? यह गरीब माली तो लगता है कि बस पागल है। इससे मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचने वाला।" सो पिछली रातों की तरह से इस रात भी उसको राजकुमारी के महल के तीसरे कमरे में नीचे फर्श पर सुला दिया गया।

जब वह वहॉ लेट गया तो उसने सोने का बहाना किया और उस समय का इन्तजार करने लगा जब महल में सब कोई सो जाने वाला था।

जब उसने पक्का कर लिया कि महल में सब लोग सो गये तो उसने ठंड से कॉपना शुरू कर दिया। ठंड की वजह से उसके दॉत भी ज़ोर ज़ोर से बजने लगे।

इस कॉपने में वह राजकुमारी के सोने के कमरे से जा टकराया। उसके कॉपते हाथ पैर जब उसके दरवाजे को छूते थे तो ढोल के से बजने की आवाज आती थी।

इस आवाज से राजकुमारी जाग गयी और फिर दोबारा सो भी नहीं पायी। उसने माली को चुप रहने को भी कहा पर वह कुछ कराहता हुआ सा बोला — "मुझे बहुत ठंड लग रही है राजकुमारी जी।" और यह कह कर वह और ज़ोर ज़ोर से कॉपने लगा।

जब वह माली को किसी तरह भी शान्त नहीं कर सकी तो उसको डर लगा कि महल में सोने वाले दूसरे लोग उसकी आवाज सुन लेंगे और माली के साथ किये गये सौदे के बारे में जान जायेंगे।

सो वह उठी और उसने यह सोचते हुए अपना दरवाजा खोला कि यह तो बहुत ही सीधा लड़का है यह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुॅचा सकता। अब वह सीधे दिमाग वाला था या नहीं, यह तो पता नहीं, पर उस रात के बाद से राजकुमारी को बच्चे की आशा हो गयी।

राजकुमारी के गुस्से और शरम की कोई हद नहीं थी। इस बात की चिन्ता करके कि अभी या देर से लोग उसके बच्चे के बारे में जान तो जायेंगे ही सो उसने माली से कहा — "अब तुम्हारे लिये यहाँ करने के लिये कुछ नहीं बचा सिवाय इसके कि तुम यहाँ से मेरे साथ भाग जाओ।"

"तुम्हारे साथ? इससे तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

"ठीक है तो फिर यहीं रहो जब तक सबको पता न चल जाये।"

पर फिर भी किसी तरह उसने माली को अपने साथ भाग जाने पर तैयार कर लिया। उसने अपने कुछ सामान की एक गठरी बाँधी, थोड़ा सा पैसा साथ में लिया और वे दोनों पैदल ही एक रात वहाँ से भाग निकले।

रास्ते में उनको गाय चराने वाले मिले, भेड़ चराने वाले मिले, वे खेतों से गुजरे, वे मैदानों से निकले। ये सब देख कर राजकुमारी ने पूछा — "ये सब जानवर किसके हैं?"

माली बोला — "ये सब जानवर राजा गारनर के हैं।"

"ओह बेचारी मैं।"

माली ने पूछा — "क्यों? तुम बेचारी क्यों? क्या बात है?"

राजकुमारी बोली — "बेचारी मैं इसलिये कि मैंने उसके बेटे से शादी करने से मना कर दिया।"

माली बोला — "यह तुमने बहुत बुरा किया।"

राजकुमारी ने फिर पूछा — "और यह जमीन किसकी है?"

"यह भी राजा गारनर की है।"

राजकुमारी फिर बोली — "ओह बेचारी मैं।"

अब तक चलते चलते राजकुमारी बहुत थक गयी थी। चलते चलते वे एक नौजवान के घर पहुँचे। उस नौजवान ने उनको बताया कि वह राजा गारनर के नौकर का बेटा था। यह घर राजा के महल के पास ही था।

उसका सारा घर धुँए से काला हुआ पड़ा था। उसमें एक पुराना पलंग पड़ा था, एक स्टोव रखा था और एक घर को गरम रखने वाली अंगीठी थी।

उस घर के बराबर में ही एक जानवर रखने का बाड़ा और एक मुर्गीखाना था। वह नौजवान रात को ही अपना मकान माली को दे कर चला गया।

माली ने वहाँ जाते ही राजकुमारी से कहा — "मुझे बहुत भूख लगी है। एक मुर्गा मारो और उसे मेरे लिये पका दो।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया। वह रात उन्होंने वहाँ उस छोटे से मकान में ही गुजारी।

सुबह को माली वहाँ से यह कह कर चला गया कि वह शाम होने से पहले घर वापस आ जायेगा। अब राजकुमारी उस मकान में अकेली थी कि अचानक उसने दरवाजे पर दस्तक सुनी। उसने

दरवाजा खोला तो वहाँ राजा गारनर का बेटा अपने शाही कपड़ों में सजा खड़ा था।

उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ तुम क्या कर रही हो?"

बड़ी मुश्किल से राजकुमारी की आवाज निकली — "मैं आपके नौकर के बेटे के दोस्त की पत्नी हूँ।"

राजकुमार बोला — "हो सकता है पर तुम मुझे कोई ईमानदार स्त्री नहीं लगती। अगर तुम चोर हो तो? क्योंकि अक्सर ही यहाँ कोई न कोई मेरी मुर्गियाँ चुराने आता रहता है।"

फिर राजकुमार ने मुर्गियों को आवाज दी और उनको गिन कर बोला — "अरे इसमें तो एक मुर्गी कम है। कल तक तो यहाँ सब थीं।"

कह कर उसने वहाँ रखा सारा सामान छानना शुरू कर दिया। जब वह स्टोव के पास आया तो उसको मुर्गी के कुछ पंख पड़े मिल गये। ये उस मुर्गी के पंख थे जो कल रात राजकुमारी ने माली के लिये पकायी थी।

उन पंखों को देख कर राजकुमार ने कहा — "इसका मतलब यह है कि तुम चोर हो। तुमने मेरी एक मुर्गी चुरा कर खा ली है। भगवान को धन्यवाद दो कि मैंने तुमको पकड़ा है, अगर किसी और ने पकड़ा होता तो उसने तुमको कानून के हवाले कर दिया होता।

पर चलो, मैं तुमको राजा के दरबार में नहीं ले जाता। अब आगे से कुछ मत चुराना।"

यह सब सुन कर राजकुमारी की ऑखों से तो झर झर ऑसू बह निकले। तभी रानी वहॉ आ गयी और उसने देखा कि वह बेचारी लड़की तो रोये जा रही है।

वह उसको धीरज बॅधाते हुए बोली — "तुम चिन्ता न करो बेटी। यह मेरा बेटा भी बस बड़ा ही अजीब आदमी है। चलो जब तक तुम यहॉ हो तुम मेरे पास काम कर लेना।

मेरे पोता होने वाला है तो मुझे उसके लिये कुछ कपड़े तैयार करवाने हैं। तुम उनकी सिलाई में मेरी सहायता कर देना।" यह कह कर रानी उसको बच्चे के लिये कुछ कपड़े सिलने के लिये दे कर चली गयी।

शाम को जब माली घर आया तो राजकुमारी बहुत रोयी और उसको दिन में हुई राजकुमार और रानी की घटना बतायी और बोली कि इस सबकी जिम्मेदार केवल वह खुद है।

माली ने किसी तरह उसे शान्त किया और उसे वहीं रहने के लिये मना लिया।

राजकुमारी ने पूछा — "लेकिन हम यहॉ रहेंगे कैसे। अभी हमारे बच्चा होगा तो हमारे पास तो इतना भी नहीं है कि हम उसको कुछ पहना सकें।"

माली बोला — "जब रानी यहॉ कल आयें और तुमको सिलाई का और काम दें तो तुम उनके कपड़ों में से एक पोशाक निकाल कर छिपा लेना।"

सो अगले दिन जब रानी उसको कपड़े दे कर वापस जा रही थी तो राजकुमारी ने उतनी देर इन्तजार किया जब तक रानी ने अपना मुॅह पूरी तरह से नहीं फेर लिया। फिर जैसे ही रानी का मुॅह पूरी तरह से फिरा उसने उन पोशाकों में से एक पोशाक चुरा कर रख ली।

कुछ मिनट बाद ही वहॉ राजकुमार आ गया और अपनी मॉ से बोला — "मॉ, आपके साथ यहॉ कौन काम कर रहा है?"

और फिर राजकुमारी की तरफ देख कर बोला — "अरे क्या यह चोर फिर यहॉ? आपको मालूम है क्या कि यह कुछ भी चुराने की हिम्मत कर सकती है?"

यह कह कर उसने राजकुमारी की छिपायी हुई बच्चे की पोशाक बाहर निकाल कर उसको दिखा दी। फिर बोला — "यह तो फर्शों के अन्दर जाने तक की भी ताकत रखती है मॉ। आप कहॉ इसके चक्कर में पड़ीं।"

यह सुन कर राजकुमारी की ऑखों से फिर से ऑसू बहने लगे पर रानी उसकी तरफदारी करती हुई बोली — "ये मामले स्त्रियों के हैं तुम यहॉ उनके बीच में क्या कर रहे हो?"

राजकुमारी को रोता देख कर उसने उसको फिर तसल्ली दी और उसने राजकुमारी को अगले दिन महल में आने के लिये कहा ताकि वह अगले दिन वहॉ आ कर उसके लिये मोती की कुछ मालाऐं बना दे।

राजकुमारी अपने उस छोटे से मकान में वापस लौट आयी और रात को अपने पति को उस दिन की घटना के बारे में बताया।

माली बोला — "तुम उसके बारे में बिल्कुल भी न सोचो। यह राजा तो बहुत पुराना कंजूस और बहुत ही नीच आदमी है पर हॉ यह ध्यान रखना कि तुम कल एक मोती की माला वहॉ से अपने बच्चे के लिये जरूर लेती आना।"

अगले दिन राजकुमारी रानी के पास उसकी मोती की माला बनवाने के लिये फिर महल गयी। जब रानी नहीं देख रही थी तो राजकुमारी ने एक मोती की माला अपनी जेब में रख ली।

कुछ ही देर में राजकुमार भी घर आ गया तो उसने अपनी मॉ से कहा — "मॉ आपने इसे फिर अपने पास काम करने के लिये रख लिया। यह फिर कुछ चुरा कर ले जायेगी। आप मेरी बात मानती क्यों नहीं हैं।"

फिर इधर उधर देख कर बोला — "क्या आपने इसको मोती दिये मॉ? मैं शर्त लगा सकता हूॅ कि कम से कम एक मोती की माला तो इसने जरूर ही चुरा ही ली होगी।"

और यह कह कर उसने राजकुमारी की जेब में हाथ डाल दिया और उसकी जेब से एक मोती की माला निकल आयी। यह देख कर तो राजकुमारी बेहोश हो गयी। रानी ने उसको नमक सुँघाया और उसको होश में ला कर उसको फिर से धीरज बँधाया।

अगले दिन जब वह रानी के यहाँ फिर काम कर रही थी तो उसको बच्चा होने वाला हो गया तो रानी ने उसको ले जा कर राजकुमार के पलंग पर लिटा दिया। कुछ ही देर में उसको लड़का हो गया।

तभी राजकुमार आ गया और उसको अपने पलंग पर लेटा देख कर चीखा — "माँ यह क्या? यह चोर मेरे बिस्तर में?"

अब रानी मुस्कुरा कर बोली — "बेटे, बस करो। अब तुम्हारी हँसी बहुत हो गयी।"

फिर उसने राजकुमारी से कहा — "बेटी, यह मेरा बेटा ही तुम्हारा पति है जिससे तुमने शादी करने से इनकार कर दिया था। वही तुम्हारे यहाँ माली बन कर तुम्हारा दिल जीत कर तुमको यहाँ ले आया है।"

अब सारा भेद खुल गया था। राजकुमारी को जब सब कुछ पता चला तो वह अपने किये पर बहुत शरमिन्दा हुई।

राजकुमारी के माता पिता को बुलवा लिया गया, साथ में पड़ोसी राजाओं को भी। पोते के जन्म की खुशी में तीन दिन तक दावत चलती रही और सारे राज्य में खूब खुशियॉ मनायीं गयीं।

3 सबसे अच्छी इच्छा[11]

कमरे में सोने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के डेनमार्क देश की है। इसमें तीन भाई हैं। जिनमें से हर एक के पास एक एक वरदान है। इन वरदानों के साथ वे सफर पर निकलते हैं और अपने सफर में तीन जगह रुकते हैं।

इनमें से सबसे छोटा भाई अपने इस सफर में तीन चीज़ें इकट्ठा करता है, उनका तीन बार ही इस्तेमाल करता है और फिर राजकुमारी के महल में भी तीन रात सो कर उससे शादी कर लेता है।

तो पढ़ो यूरोप के डेनमार्क देश की यह लोकप्रिय लोक कथा जिसमें एक भाई ने रात को राजकुमारी के महल में सो कर कैसे उससे शादी कर ली।

कुछ समय पुरानी बात है कि डेनमार्क देश में तीन भाई रहते थे। यह तो पता नहीं कि यह सब कैसे हुआ पर एक बार उन तीनों भाइयों को एक एक वरदान मिला।

दोनों बड़े भाइयों ने तो यह वरदान मॉगने में जरा भी देर नहीं की। उन्होंने तुरन्त ही यह इच्छा प्रगट की कि वे जब भी अपनी

[11] The Best Wish – a folktale from Denmark, Europe

जेब में हाथ डालें तो उन्हें उसमें धन मिल जाये, यानी कि जब भी उनको पैसे की जरूरत हो तो उनकी जेब में हमेशा पैसे रहें।

लेकिन सबसे छोटा भाई जिसका नाम बूट्स[12] था, उसने किसी दूसरे प्रकार की ही इच्छा प्रकट की। उसकी इच्छा थी कि जो भी स्त्री उसे देखे वही उसे प्रेम करने लगे। उन सबकी इच्छा पूरी हुई। पर कैसे□इसके लिये अब आगे की कहानी सुनो –

इन इच्छाओं के पाने के बाद दोनों बड़े भाइयों ने दुनियॉ देखने का प्रोग्राम बनाया। बूट्स ने उनसे पूछा कि क्या वह भी उनके साथ दुनियॉ घूमने चल सकता था।

परन्तु उन्होंने उसकी एक न सुनी और बोले — "हम तो जहॉ भी जायेंगे राजकुमार समझे जायेंगे मगर तुम एक बेवकूफ लड़के समझे जाओगे। तुम्हारे पास तो एक पेनी भी नहीं है और न कभी होगी। फिर तुम्हारी देखभाल भी कौन करेगा?"

पर बूट्स ने जिद की "कुछ भी सही, मैं तुम्हारे साथ ही चलूॅगा।"

काफी प्रार्थना के बाद वे दोनों बड़े भाई उसको अपने साथ ले चलने के लिये मान गये पर साथ में उन्होंने एक शर्त लगा दी कि वह उनका नौकर बन कर उनके साथ चलेगा। बूट्स मान गया सो वे तीनों चल पड़े।

[12] Boots – name of the youngest brother.

एक दो दिन का सफर करने के बाद वे लोग एक सराय में आये।

दोनों बड़े भाइयों के पास तो खूब पैसा था सो उन्होंने बड़े शानदार खाने का आर्डर दिया, जैसे मुर्गा, मछली, गोश्त, ब्रान्डी आदि, मगर बूट्स को किसी ने अन्दर भी नहीं जाने दिया। उसे गाड़ी घोड़े और सामान की देखभाल के लिये सराय के बाहर ही छोड़ दिया गया।

उसने घोड़ों को अस्तबल में बॉधा, गाड़ी को धोया और फिर घोड़ों के खाने के लिये घास ले कर गया। जब वह यह सब कर रहा था तो सराय के मालिक की पत्नी उसे खिड़की से देख रही थी।

उसकी ऑखें उस सुन्दर लड़के के चेहरे से ही नहीं हट पा रही थीं हालॉकि वह तो मेहमानों का केवल नौकर ही था। जितनी अधिक देर तक वह उसे देखती रही उसे वह उतना ही अधिक सुन्दर दिखायी दे रहा था।

सराय का मालिक बोला — "अरे, तुम वहॉ खिड़की पर खड़ी खड़ी क्या कर रही हो, ज़रा जा कर देखो कि रसोई में खाना ठीक से बन रहा है कि नहीं। हमारे शाही मेहमान खाने का इन्तजार कर रहे हैं।"

पत्नी उधर से अपनी ऑख हटाये बिना ही बोली — "ओह, अगर उनको खाना पसन्द नहीं भी आया तो न सही, मैं क्या करूॅ।

मैंने अभी तक इतना सुन्दर लड़का पहले कभी नहीं देखा। क्यों न हम उसको रसोई में बुला कर कुछ अच्छा सा खाना उसको खाने के लिये दे दें। ऐसा लगता है कि बेचारा काफी मेहनत करता है।"

"क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? रसोई में जाओ और अपना काम देखो।"

पत्नी ने पति से लड़ना ठीक नहीं समझा पर उसे एक विचार आया और वह एक कीमती चीज़ अपने ऐप्रन में छिपा कर सराय से बाहर आयी।

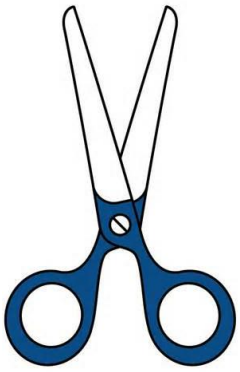

यह कीमती चीज़ थी एक कैंची। यह एक जादुई कैंची थी। इस जादुई कैंची का काम यह था कि इसको हवा में चलाने से जो भी कपड़ा जिस रंग में भी सोचो उसी रंग में कट जाता था।

वह बूट्स के पास आयी और बोली — "यह कैंची तुम रखो क्योंकि तुम बहुत सुन्दर हो। इस कैंची की खासियत यह है कि इसको हवा में चलाने से जो भी कपड़ा जिस रंग में भी सोचो उसी रंग में कट जाता है।"

बूट्स ने उसे नम्रता से धन्यवाद दिया और उससे वह कैंची ले कर अपनी जेब में रख ली।

बूट्स के भाइयों का जब खाना खत्म हो गया तो वे फिर चलने के लिये तैयार हुए और बूट्स गाड़ी के पीछे नौकर की जगह पर खड़ा हुआ।

फिर वे एक दूसरी सराय में आये। वे दोनों तो सराय के अन्दर चले गये और बूट्स बाहर ही सामान आदि की देखभाल करने के लिये खड़ा रहा।

भाइयों ने बूट्स को बताया कि "अगर कोई तुमसे यह पूछे कि तुम किसके नौकर हो तो तुम कहना कि "मैं दो विदेशी राजकुमारों का नौकर हूँ।"

"ठीक है।"

इस बार भी वही हुआ जो पिछली सराय में हुआ था। सराय के मालिक की पत्नी ने जब उसे देखा तो वह तो बस उसे देखती ही रह गयी।

पति ने जब अपनी पत्नी को बाहर झाँकते देखा तो उसने भी उससे कहा — "वहाँ तुम दरवाजे पर क्यों खड़ी हो? जाओ और जा कर अपनी रसोई देखो। हमारी सराय में रोज रोज विदेशी राजकुमार नहीं आया करते।"

और जब वह अन्दर नहीं गयी तो वह उसको उसकी गरदन पकड़ कर अन्दर ले गया।

इस बार सराय के मालिक की पत्नी ने उसको एक जादुई मेजपोश दिया जिसकी खूबी यह थी कि उसे बिछाने पर जो भी खाना सोचो वही खाना उस मेजपोश पर आ जाता था।

तीसरी सराय में भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही उस तीसरी सराय के मालिक की पत्नी ने बूट्स को देखा तो वह भी उसकी तरफ आकर्षित हो गयी।

उसने उसको लकड़ी की एक टोंटी दी जिसकी खूबी यह थी कि उसे खोलने पर जो भी पीने की चीज़ चाहो वही मिल सकती थी।

बूट्स ने उसको भी नम्रता पूर्वक धन्यवाद दिया और वह टोंटी उससे ले कर अपनी जेब में रख ली। एक बार फिर से वे लोग कड़ी सरदी में अपने सफर पर चल दिये।

अबकी बार वे एक राजा के महल में पहुँचे। दोनों बड़े भाइयों ने अपना परिचय बादशाह के लड़कों के रूप में दिया क्योंकि उनके पास खूब पैसा था और बहुत कीमती कपड़े थे। राजा ने उनका बहुत ज़ोर शोर से स्वागत किया और राजमहल में उन्हें इज़्ज़त से ठहराया गया।

मगर बूट्स बेचारा उन्हीं फटे कपड़ों में था जिनको पहन कर वह घर से निकला था। उस बेचारे की जेब में तो एक पेनी भी नहीं थी।

उसको राजा के नौकरों ने नाव में सवार करा कर एक टापू पर भेज दिया क्योंकि वहाँ का यही नियम था कि जो भी गरीब या भिखारी वहाँ आता उसको उसी टापू पर भेज दिया जाता।

राजा ने यह नियम इसलिये बना रखा था क्योंकि वह अपने स्वादिष्ट और अच्छे खाने और पहनने के बढ़िया कपड़ों को गरीबों की नजर से गन्दा नहीं करना चाहता था।

बचा हुआ खाना जो केवल ज़िन्दा रहने के लिये ही काफी होता था भिखारियों से और गरीबों से भरे उस टापू पर भेज दिया जाता था।

घमंडी भाइयों ने अपने भाई को ऐसी जगह जाते देखा मगर अनदेखा कर दिया, बल्कि वे लोग खुश ही हुए कि अच्छा हुआ उन्हें उससे छुटकारा मिल गया।

जब बूट्स उस टापू पर पहुँचा और उसने वहाँ के लोगों की हालत देखी तो उसे अपनी तीनों कीमती चीज़ों की याद आयी। सबसे पहले उसने कैंची निकाली और उसे हवा में चलाना शुरू कर दिया और हवा में से बढ़िया बढ़िया कपड़े कट कट कर गिरने लगे।

जल्दी ही भिखारियों के पास राजा और उन घमंडी भाइयों से भी अधिक कीमती और सुन्दर कपड़े आ गये। उन कपड़ों को पहन कर वे सब बहुत खुश हुए और नाचने लगे पर वे अब अपनी भूख के लिये क्या करें।

अब बूट्स ने अपना मेजपोश निकाला और उसे बिछा दिया। अब क्या था नाम लेते ही मेजपोश पर तरह तरह के स्वाददार खानों का ढेर लग गया।

भिखारियों ने ऐसा खाना कभी ज़िन्दगी में नहीं देखा था। उन्होंने खूब खाया और खूब खिलाया। ऐसी दावत तो राजा के महल में भी शायद कभी नहीं हुई होगी जैसी उन भिखारियों के टापू पर हो रही थी।

"अब तुम्हें प्यास भी लग रही होगी, सो लो जो चाहो पियो।" कह कर बूट्स ने अपनी लकड़ी की टोंटी निकाली और उसे खोल दिया। तरह तरह की शराब उसमें से निकलने लगी।

इस प्रकार भिखारियों ने बूट्स की मेहरबानी से वह सब कुछ पाया जो किसी राजा को भी नसीब होना मुश्किल था। क्या तुम सोच सकते हो कि यह सब कुछ देख कर वहाँ क्या खुशियाँ मनायीं जा रही होंगी?

अगली सुबह राजा के नौकर भिखारियों के लिये खाना ले कर आये। वे दलिया आदि की खुरचनें, कुछ पनीर के टुकड़े और डबल रोटी के सूखे टुकड़े लाये थे। लेकिन आज भिखारियों ने उनको छुआ तक नहीं।

यह देख कर राजा के नौकरों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिस खाने के ऊपर वे रोज टूट पड़ते थे आज वे उसको छूने भी नहीं आये।

लेकिन इससे भी ज्यादा आश्चर्य उन्हें तब हुआ जब उन्होंने देखा कि सारे भिखारी राजकुमारों जैसे शाही कपड़े पहने हुए हैं।

राजा के नौकरों को लगा कि वे शायद किसी गलत टापू पर आ गये हैं। पर नहीं, यह तो वही टापू था जिस पर वे रोज आते थे।

फिर उन्होंने सोचा कि शायद यह कल वाले भिखारी की करामात रही हो। पर यह सब उसने कैसे किया होगा यह उनके दिमाग में नहीं आया। वे महल लौट गये और उन्होंने टापू के बारे में कई सारी बातें राजा को बतायीं।

एक बोला — "उनको इतना घमंड हो गया है कि उन्होंने आज के खाने को छुआ तक नहीं।"

दूसरा बोला — "उस कल वाले लड़के ने सबको शाही कपड़े पहनने को दे दिये हैं। टापू पर रहने वालों का कहना है कि उस लड़के के पास एक ऐसी कैंची है जो हवा में चलाने से सिल्क और साटन के कपड़े काटती है।"

तीसरा बोला — "उनके पास बहुत तरह का खाना और शराब पड़ी थी इसलिये उन्होंने यह खाना छुआ तक नहीं।"

एक और बोला — "और मैंने तो उस नये भिखारी की जेब में एक टोंटी जैसी चीज़ भी देखी थी।"

राजा के एक बेटी थी। उसके कानों में भी ये बातें पड़ीं तो उसके मन में इस लड़के को देखने की इच्छा हो आयी कि अगर वह कैंची उसे बेच दे तो वह भी सिल्क और साटन के कपड़े पहन पायेगी।

उसने अपने पिता को चैन नहीं लेने दिया और राजा को उस लड़के को बुलाने के लिये एक आदमी उस टापू पर भेजना ही पड़ा।

जब वह लड़का महल में आया तो राजकुमारी ने देखा कि वह किसी राजकुमार से कम नहीं लग रहा था। उसने पूछा क्या यह सच है कि उसके पास जादू की कैंची है?

बूट्स बोला कि हॉ यह सच है कि उसके पास जादू की कैंची है। उसने अपनी जेब से जादू की कैचीं निकाली और हवा में चलाने लगा। सिल्क, साटन और मखमल के कपड़ों के ढेर लग गये, पीले, हरे, गुलाबी, नीले।

राजकुमारी ने कहा — "यह कैंची हमें बेच दो। तुम जो चाहोगे हम तुम्हें वही देंगे।"

बूट्स ने कहा — "नहीं, मैं इसे नहीं बेच सकता क्योंकि ऐसी कैंची मुझे दोबारा नहीं मिल सकती।"

जब वे लोग आपस में सौदेबाजी कर रहे थे तो राजकुमारी के साथ भी वही हुआ जो उन तीनों स्त्रियों यानी सराय के मालिकों की पत्नियों के साथ हुआ था।

उसे लगा कि इतना सुन्दर लड़का तो उसने पहले कभी देखा ही नहीं था। उसे लगा कि उस लड़के के बाल पीली साटन से भी ज़्यादा पीले हैं, उसकी ऑखें नीली मखमल से भी ज़्यादा नीली हैं और उसके गाल गुलाबी सिल्क से भी ज़्यादा गुलाबी हैं।

वह उसको जाने नहीं देना चाहती थी सो उसने सौदा छोड़ कर उससे कैंची देने के लिये प्रार्थना करनी शुरू कर दी जो बूट्स उसको किसी तरह भी देने के लिये राजी नहीं था। उसने उस लड़के से पूछा कि आखिर तुम्हें इसके लिये चाहिये क्या।

बूट्स ने कहा — "मैं अगर एक रात तुम्हारे कमरे के दरवाजे पर फर्श पर सो जाऊँ तो यह कैंची मैं तुम्हें ऐसे ही दे दूँगा। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा लेकिन अगर तुम्हें मुझसे डर लगे तो तुम अपने भरोसे के दो चौकीदार रख सकती हो और रात भर कमरे में रोशनी भी रहने दे सकती हो।"

राजकुमारी को इसमें कोई परेशानी नहीं थी। सो बूट्स राजकुमारी के कमरे के दरवाजे के पास फर्श पर रात भर सोया, दो चौकीदार वहाँ रात भर रहे और कमरे में रोशनी रही।

पर राजकुमारी को नींद नहीं आयी क्योंकि वह जब भी अपनी आँखें बन्द करती उसके सामने बूट्स की सूरत नाचने लगती और फिर वह अपनी आँखें खोल लेती। रात भर यही चलता रहा। वह उसे उन सब लड़कों से सुन्दर लग रहा था जो अब तक उससे शादी के उम्मीदवार रह चुके थे।

अगले दिन राजकुमारी ने कैंची ले ली और बूट्स को भिखारियों के टापू पर वापस भेज दिया। अब उसे कैंची से कोई काम नहीं था बस उसके मन में तो बूट्स की सुन्दर सूरत बसी हुई थी।

सो अब उसने उस अच्छे खाने के बारे में सोचा जो उस टापू पर बूट्स ने वहॉ के भिखारियों को दिया था। वह उसकी तह तक भी पहुँचना चाहती थी। सो बूट्स को फिर महल में लाया गया।

जब राजकुमारी ने उन बढ़िया खानों के बारे में उससे पूछा तो उसने उसको मेजपोश के बारे में बताया और साथ में यह भी कहा कि वह उसको बेचेगा नहीं, लेकिन अपनी पुरानी शर्त पर उसको ऐसे ही दे सकता हैं।

राजकुमारी राजी हो गयी और बूट्स पहले दिन की तरह से फिर वैसे ही राजकुमारी के कमरे के दरवाजे के पास फर्श पर सोया।

इस रात राजकुमारी को और भी कम नींद आयी। वह रात भर बूट्स का चेहरा अपनी ऑखों के सामने देखती रही और फिर भी उसे रात छोटी लगी। अगले दिन बूट्स ने अपना जादू का मेजपोश राजकुमारी को दे दिया।

राजकुमारी ने राजा से बूट्स को महल में रखने की जिद की तो राजा ने कहा — "किसी चीज़ की कोई हद भी तो होती है, हम इस तरीके से उसे यहॉ नहीं रख सकते। उसे टापू पर जाना ही होगा।"

और अगले दिन राजकुमारी की इच्छा के खिलाफ उसको फिर उसी टापू पर भेज दिया गया। जाते जाते राजकुमारी से उसने कहा कि उसको उन दो राजकुमारों से अच्छा व्यवहार करना चाहिये जो उनके महल में ठहरे हुए हैं।

अबकी बार राजकुमारी को उसकी शराब की याद आयी तो वह फिर अपने पिता के पास गयी और बोली — "पिता जी, उसके पास अभी एक चीज़ और है जो मेरे पास होनी चाहिये इसलिये मेहरबानी करके उसे एक बार और बुला दीजिये।"

राजा ने अनमने मन से उसको बुलवा दिया। इस बार जब बूट्स आया तो राजा ने भी उनकी बातें सुनी।

राजकुमारी ने पूछा — "क्या तुम्हारे पास कोई जादुई टोंटी भी है?"

बूट्स ने फिर वही जवाब दिया — "हॉ है। अगर राजा मुझे अपना आधा राज्य भी दे दें तो भी मैं उसे नहीं बेचूँगा पर अगर तुम मुझसे शादी करने को तैयार हो तो मैं तुमको वह ऐसे ही दे सकता हूँ।"

राजकुमारी मुँह फेर कर हँसी। फिर उसने अपने पिता की ओर देखा। पिता ने भी अपनी बेटी की ओर देखा तो उसको लगा कि उसकी बेटी इस लड़के को प्यार करती थी।

राजा ने बेटी से कहा — "ठीक है, हम तुम्हारी शादी इस लड़के से कर देंगे क्योंकि इसके पास ऐसी चीज़ें हैं जिनकी वजह से वह हमारे जितना ही धनी है।"

बस फिर क्या था बूट्स और राजकुमारी की शादी हो गयी। राजा ने अपना आधा राज्य उन दोनों को दे दिया। उसके भाइयों

को भिखारियों के टापू पर भेज दिया गया। वे वहाँ उस टापू पर धन का क्या करते क्योंकि वहाँ तो खरीदने को कुछ था ही नहीं।

अगर बूट्स ने मेहरबानी करके कोई नाव उन्हें लेने नहीं भेजी होगी तो हमें यकीन है कि वे लोग अभी भी वहीं होंगे। पर हम आशा करते हैं कि बूट्स ने उन्हें जरूर माफ कर दिया होगा।

पर जब तक वहाँ बूट्स का राज्य रहा उसने और उसकी रानी ने फिर किसी और को उस टापू पर नहीं भेजा।

4 नौरोवे का काला बैल[13]

एक बार की बात है कि नौरोवे[14] में एक स्त्री रहती थी जिसके तीन बेटियॉ थीं। एक बार वे अपनी किस्मत जानने के लिये एक बुढ़िया के पास गयीं जो एक जंगल में रहती थी।

जब वे वहॉ पहुँची तो उसने उनसे एक पेड़ से एक एक सेब तोड़ने के लिये कहा और कहा कि वह उसको ले कर उसकी रसोई घर में आयें। सो तीनों लड़कियों ने एक एक सेब तोड़ा और उसको ले कर वे उस बुढ़िया के रसोईघर में गयीं।

उसने तीनों लड़कियों से कहा कि उनको अपना सेब ऐसे छीलना चाहिये कि उसका छिलका न टूटे। जब वह ऐसा कर लें तो उस छिलके को उन्हें अपने दाहिने हाथ से अपने बॉये कन्धे के पीछे फेंक देना चाहिये।

जब उन्होंने उसे वैसे ही फेंक दिया जैसे उसने उनसे फेंकने के लिये कहा था तो उनके उसको फेंकने के बाद उसने देखा कि वह किस ढंग से पड़ा है और सबसे बड़ी लड़की को उसने बताया कि उसकी शादी एक अर्ल से होगी।

---

[13] The Black Bull of Norroway – a fairy tale from Norway, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.365cinderellas.com/2011/05/
Taken from *English Fairy Tales,* Retold by AF Steele. London: McMillan & Co. 1918.

[14] Norroway means “Norway”. Norway is oneo f the five Norse, or Nordic or Sandinavian countries situated in far Northern part of Europe.

जब दूसरी लड़की ने अपने सेब का छिलका इस तरीके से फेंका तो उसने उसको बताया कि उसकी शादी एक लौर्ड[15] से होगी।

पर जब तीसरी लड़की ने अपने सेब का छिलका इस तरीके से फेंका तो उसने उसको बताया कि उसकी शादी एक काले बैल से होगी।

अब दोनों बड़ी लड़कियॉ तो अपनी किस्मत जान कर बहुत खुश थीं पर सबसे छोटी बहिन ने हॅसते हुए कहा कि "कोई बात नहीं मैं काले बैल से सन्तुष्ट रहूॅगी।"

जब उसकी बहिनों ने उससे कहा कि यह मजाक की बात नहीं थी और उसको इसे हॅसी में नहीं लेना चाहिये कहीं ऐसा न हो कि उस बुढ़िया का कहा सच हो जाये तो उसने जवाब दिया कि वैसे भी वह शादी नहीं करना चाहती थी। एक काले बैल की बजाय वह घर पर रहना ज़्यादा पसन्द करेगी।

इस बात को एक साल गुजर गया। सबसे बड़ी लड़की की शादी एक अर्ल से हो गयी और बीच वाली लड़की की शादी एक लौर्ड से हो गयी।

तीसरी सबसे छोटी लड़की एक दिन एक काले बैल को अपने घर के दरवाजे पर खड़ा देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। उसको देखते ही लड़की डर गयी पर फिर उसने देखा कि बैल तो बड़ा शान्त और नम्र था।

[15] Earl and Lord are honorable statuses in European royal families.

अब इस लड़की को अपना वायदा तो निभाना ही था सो उसने अपनी मॉ को नमस्ते की और उस काले बैल पर चढ़ कर उसके साथ चल दी।

यह बैल उसको बहुत ही आसान रास्ते से ले जा रहा था। वह ऊबड़ खाबड़ रास्तों को बचा बचा कर चल रहा था ताकि उसकी होने वाली पत्नी को कोई तकलीफ न पहुँचे।

वे लोग बहुत देर तक चलते रहे कि लड़की ने कहा कि उसको भूख लगी है और अब वह खाना खाना चाहती है। काला बैल बहुत ही नम्र आवाज में बोला — "मेरे दाहिने कान में खाना रखा है उसमें से खाना निकाल लो। मेरे बॉये कान में पीने के लिये कुछ रखा है उसमें से कुछ पीने के लिये निकाल लो।"

लड़की ने उसके दाहिने कान में हाथ डाल दिया और खाना निकाल लिया। उसने खाना खाया फिर उसने उसके बॉये कान में हाथ डाला तो पीने के लिये कुछ निकाल लिया।

उसके पास खाने का कुछ सामान बच रहा तो वह उसने बाद में खाने के लिये अपने रूमाल में बॉध लिया। कुछ दूर जाने पर एक किला आया तो बैल ने उसे बताया कि उसका भाई वहॉ रहता था। रात को वे वहीं रुकेंगे। सो रात को वे वहीं रुक गये।

इस बैल को वहॉ के सारे बैलों मे सबसे अच्छी देखभाल मिली और लड़की को भी सबसे ज़्यादा आरामदेह कमरा मिला।

सुबह को उनके उस किले को छोड़ने से पहले वहॉ के लोगों ने लड़की को एक सुनहरा अखरोट दिया और उससे कहा कि वह उसको किन्हीं खास हालात में ही इस्तेमाल करे। उस समय वे लोग उसकी सहायता जरूर करेंगे।

वह लड़की उस बैल पर चढ़ कर फिर से अगले सारा दिन चली। जब रात हुई तो वे एक और महल के पास आ निकले। बैल ने बताया कि यह उसके एक दूसरे भाई का महल था। यह महल पहले वाले महल से भी अच्छा था।

बैल ने कहा कि उस रात वे लोग वहॉ उसी महल में ठहरेंगे। इस बार लड़की ने वहॉ के लोगों से कहा कि उनको बैल का खास ख्याल रखना चाहिये।

अगली सुबह जब वे लोग वहॉ से चले तो वहॉ के लोगों ने उसको सोने का एक बहुत बड़ा हिकोरी नट दिया। उन्होंने भी उसे चेतावनी दी कि वह उसको ऐसे ही न तोड़े बल्कि जब बहुत जरूरत पड़े तभी तोड़े और तब वे उसकी सहायता करेंगे।

वे दोनों अगले सारा दिन फिर से एक दूसरे से कहानियॉ कहते सुनते चलते रहे। अब दोनों की दोस्ती बढ़ती जा रही थी।

जब रात हुई तो वे एक और महल के पास आ निकले। बैल ने बताया कि यह उसके एक तीसरे भाई का महल था और उस रात वे लोग वहॉ उसी महल में ठहरेंगे।

यह महल उन दो महलों से भी अच्छा था जिनमे वह पिछली दो रातों में ठहरी थी। इस बार जब लड़की वहॉ से चली तो वहॉ के लोगों ने उसको सोने का एक हैज़ल नट दिया और इसको वही चेतावनी दी कि वह उसको जब बहुत ज़्यादा जरूरत पड़े तभी इस्तेमाल करे। वे उसकी सहायता के लिये तुरन्त ही आ जायेंगे।

वे दोनों फिर बात करते आगे चले तो इस बार एक जंगल में आ निकले। यहॉ आ कर बैल ने कहा कि अब यहॉ पर वह अपना जादू तोड़ने की कोशिश करेगा और इस जादू को तोड़ने में अब उसे उसकी सहायता चाहिये। लड़की तैयार हो गयी।

बैल ने कहा — "इस जादू को हटाने के लिये तुमको एक ऊॅची चट्टान पर बिना हाथ पैर हिलाये बैठना चाहिये नहीं तो मैं तुमको फिर कभी नहीं देख पाऊॅगा।

अगर तुम्हारे आसपास की सब चीज़ें नीली पड़ जायें तो समझना कि मैंने उस जीव को मार दिया है पर अगर लाल हो जायें तो समझना कि उसने मुझे जीत लिया है।"

इतना कह कर वह वहॉ से चला गया। काफी देर तक लड़ाई की बहुत ज़ोर ज़ोर की आवाजें आती रहीं। लड़की एक ऊॅची सी चट्टान पर बिना हाथ पैर हिलाये बैठी रही।

फिर उसने देखा कि अचानक से उसके आसपास की चीज़ें नीली पड़ने लगीं। वह बहुत खुश हो गयी क्योंकि इसका मतलब था कि उसका प्यारा बैल जीत गया था।

इस खुशी में उसने अपना पैर हिला दिया। और इस तरह से उस बैल का जादू टूट गया।

हालॉकि उसको लगा कि वहॉ उसने बैल का बहुत देर तक इन्तजार किया पर वह काला बैल वापस नहीं आया।

यह हालत उसको जरूरत की हालत लगी तो उसको उन तीनों गिरियों की याद आयी जो उसको उन तीन महलों से मिली थीं जहॉ वह आते समय रात को सोयी थी।

लेकिन शायद उसको तो अभी इससे भी ज़्यादा बदकिस्मती का सामना करना पड़े सो यह सोच कर उसने उनको अभी इस्तेमाल न करने का इरादा किया।

फिर उसने वहॉ से चलने का इरादा किया और वह वहॉ से चल दी। चलते चलते वह एक शीशे के पहाड़ के पास आ गयी। उसने उस पर चढ़ने की कोशिश की पर अपनी इस कोशिश में वह कई बार फिसल गयी सो उसने उस पर चढ़ने का इरादा छोड़ दिया।

वहॉ उसको एक लोहार का घर दिखायी दे गया तो वह उसके पास गयी और उससे कहा कि वह उस शीशे के पहाड़ पर चढ़ना चाहती थी सो उसे लोहे के जूते चाहिये थे।

लोहार ने उससे उनकी कीमत माँगी कि वह उसको ये जूते बना कर तो दे देगा पर उसको उसके साथ सात महीने और सात दिन काम करना पड़ेगा।

सो वह उस लोहार के साथ सात महीने और सात दिन काम करती रही। इस बीच लोहार ने लड़की को बताया कि वह उन जूतों को पहन कर उस पहाड़ी पर चढ़ तो जायेगी पर वहाँ जा कर उसको ट्रौल[16] का देश मिलेगा।

खैर लड़की ने अपने लोहे के जूते पहने और उस शीशे की पहाड़ी पर चढ़ने के लिये चल दी। लोहार ठीक कह रहा था वहाँ पहुँच कर वह ट्रौल के देश में आ पहुँची थी।

वहाँ आ कर उसने सुना कि वहाँ कोई मुकाबला होने वाला था। वहाँ कोई एक बहुत ही शानदार नाइट था जिसकी कमीज पर खून के धब्बे लग गये थे और वह शादी इसलिये नहीं कर पा रहा था क्योंकि कोई भी ट्रौल लड़की उसकी कमीज से खून के वे धब्बे नहीं छुड़ा पा रही थी।

जब ट्रौल लड़कियाँ नाइट की उस कमीज के खून धब्बों को साफ कर रही थीं तो वे उनको इतनी ज़ोर ज़ोर से मल रही थीं कि

[16] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.

उनके बालों वाले शरीर और उनकी लाल ऑखें खूब चमक रहीं थीं। पर वह खून के धब्बे छूटने पर नहीं आ रहे थे।

इस लड़की ने भी उस मुकाबले में हिस्सा लेने की प्रार्थना की तो उसको भी इजाज़त मिल गयी। जैसे ही उसने उस कमीज को नदी के पानी में डुबोया तो वह कमीज तो बिल्कुल साफ हो गयी।

पर तभी एक ट्रौल राजकुमारी ने उसके हाथ से वह कमीज छीन ली और उसे नाइट को देने के लिये दौड़ गयी। वहॉ जा कर उसने नाइट को बताया कि उसकी कमीज तो उसी ने धो कर साफ की है। शर्त के अनुसार उस ट्रौल राजकुमारी की शादी उस नाइट से पक्की हो गयी।

अब लड़की ने अपना पहली गिरी तोड़ी तो उसमें तो बहुत सारे जवाहरात भरे हुए थे। लड़की को पता था कि ट्रौल कितने लालची होते हैं सो उसने ट्रौल राजकुमारी से एक सौदा किया।

उसने उससे कहा कि अगर वह अपनी शादी एक दिन देर से करेगी और उस रात वह उसको नाइट के कमरे में सोने देगी तो वह उसको एक मुट्ठी भर कर जवाहरात देगी।

राजकुमारी मान गयी और उसने अपनी शादी एक दिन आगे कर दी। उस रात उसने लड़की को भी नाइट के कमरे में सोने दिया। पर राजकुमारी ने नाइट को कोई ऐसी दवा पिला दी जिससे वह नाइट रात भर सोता रहा।

लड़की सारी रात उसके पास बैठ कर गाती रही —

मैं तुम्हारे लिये लोहार के पास काम करती रही
मैं तुम्हारे लिये इस शीशे की पहाड़ी पर चढ़ी
मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे खून के धब्बे वाले कपड़े धोये
क्या तुम मेरे लिय जागोगे नहीं और मेरी तरफ देखोगे नहीं

पर नाइट नहीं जागा। वह सुबह को ऐसे ही वहॉ से वापस आ गयी। अगले दिन उस लड़की ने अपनी दूसरी गिरी तोड़ी तो इस गिरी में भी बहुत सारे जवाहरात भरे थे पर ये पहले जवाहरातों से कहीं ज़्यादा चमकीले थे।

जब उसने ये जवाहरात राजकुमारी को दिखाये तो वह इनको लेने से अपने आपको रोक नहीं सकी। सो उसने राजकुमारी से फिर वही सौदा किया कि अगर वह एक दिन अपनी शादी और आगे कर दे और उसको नाइट के कमरे में सोने दे तो वह उसको उन जवाहरातों में से एक मुट्ठी जवाहरात दे देगी।

राजकुमारी तैयार हो गयी और वह लड़की उस नाइट के कमरे में चली गयी। लड़की रात भर उसके लिये वही गाना गाती रही जो उसने उसके लिये पिछली रात गाया था। पर राजकुमारी ने उसके साथ पहली रात जैसा ही किया और नाइट सुबह तक सो कर ही नहीं उठा।

लड़की का दिल टूट गया। और वह दूसरे दिन भी वहॉ से ऐसे ही वापस आ गयी।

अब उसके पास तोड़ने के लिये केवल एक ही गिरी रह गयी थी। सो अगले दिन उसने वह भी तोड़ दी। वह भी जवाहरातों से भरी हुई थी पर उस गिरी के जवाहरात पिछली दो गिरियों के जवाहरातों से कहीं ज़्यादा चमकीले थे।

जब उसने ये जवाहरात राजकुमारी को दिखाये तो वह इनको लेने के लिये तो पागल सी हो गयी अपने आपको रोक ही नहीं सकी।

यह देख कर उसने राजकुमारी से फिर वही सौदा किया कि अगर वह एक दिन अपनी शादी और आगे कर दे और उसको नाइट के कमरे में सोने दे तो वह उसको उन जवाहरातों में से एक मुट्ठी जवाहरात दे देगी।

राजकुमारी तैयार हो गयी और उस लड़की ने उसको जवाहरात दे दिये। राजकुमारी सारा दिन उन जवाहरातों को अपने हाथ में उलट पलट कर खेलती रही और खुशी से हाथ मलती रही।

उस खुशी में उसको यह सुनायी ही नहीं पड़ा कि उसके महल की दासियॉ उस लड़की की सुन्दरता के बारे में बात कर रही थीं जो चॉदनी में नाइट के लिये दुखभरा गीत गा रही थी। और न उसको यही पता चला कि नाइट ने उन दासियों की बात सुन ली है।

सो इस रात नाइट ने राजकुमारी की दी हुई दवा को पीने का केवल बहाना किया। उसने वह सारी दवा खिड़की से बाहर फेंक दी।

रात को जैसे ही लड़की नाइट के कमरे में गयी तो नाइट ने उसको तुरन्त ही पहचान लिया और उसको गले लगा लिया। बस बैल का जादू टूट गया और अब वह एक सुन्दर राजकुमार बन गया।

दोनों सारे सोते हुए ट्रौल को सोता छोड़ कर एक साथ उस शीशे की पहाड़ी से चुपचाप नीचे उतर आये और उस जगह से दूर अपने महल भाग गये और ज़िन्दगी भर शान्ति से खुशी से रहे।

5 नौर्वे का कत्थई भालू[17]

कमरे में सोने दो जैसी कहानियों के इस संग्रह में हमने यह कहानी यूरोप महाद्वीप के स्काटलैंड देश की कहानियों से ली है। तो लो पढ़ो यह कहानी अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि आयरलैंड में एक राजा राज करता था। उसके तीन बहुत सुन्दर और बहुत अच्छी बेटियॉ थीं। एक दिन वे सब अपने महल के लान में टहल रहे थे तो राजा को उनसे कुछ हॅसी करने की सूझी। उसने उनसे पूछा कि वे किससे शादी करना चाहती थीं।

एक बोली मैं उल्स्टर के राजा से शादी करना चाहती हूॅ। दूसरी बोली "मैं मुन्स्टर[18] के राजा से शादी करना चाहती हूॅ।" पर तीसरी बोली "मैं शादी नहीं करूॅगी बल्कि मुझे तो नौर्वे का कत्थई भालू चाहिये।"

---

[17] Brown Bear of Norway – a fairy tale from Scotland, Great Britain, Europe.
Taken from the Web Site :
http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/brownbear.html
Norway is one of the five Norse, or Nordic, or Scandinavian countries which are situated in the Northernmost part of Europe – Denmark, Finland, Iceland, Norway, and Sweden.
This story is taken from the book : Lang, Andrew, ed. *The Lilac Fairy Book.* New York: Dover, 1968. (Original published 1910.)

[18] Ulster and Munster

ऐसा उसने इसलिये कहा था क्योंकि उसकी आया अक्सर एक जादू पड़े राजकुमार के बारे में बात किया करती थी जिसको वह इस नाम से बुलाती थी और उसके बारे में सुनते सुनते उसको उससे प्यार हो गया था।

सो जब राजा ने पूछा कि वह किससे शादी करेगी तो उसकी जबान पर पहला नाम उसी का आया क्योंकि पिछली रात वह उसी का सपना देख रही थी।

पहली राजकुमारी हॅसी दूसरी राजकुमारी हॅसी और फिर वे दोनों अपनी सबसे छोटी बहिन के साथ सारी शाम हॅसती ही रहीं।

पर उसी रात वह राजकुमारी एक बड़े से कमरे में सोते से जाग गयी जिसमें हजारों लैंप जल उठे थे। उस कमरे के फर्श पर बहुत कीमती कालीन पड़े हुए थे और उसकी दीवारों पर सोने और चॉदी से बुने हुए कपड़े लटक रहे थे। उस कमरे में बहुत सारे लोग बैठे हुए थे।

उन्हीं में उसने एक बहुत सुन्दर राजकुमार को बैठे देखा। एक पल भी नहीं बीता होगा कि उसने देखा कि वह उसके सामने झुका हुआ उससे अपने प्रेम का इज़हार कर रहा था कि वह उसको कितना चाहता था और क्या वह उसकी रानी बनेगी।

उसको देख कर उसका दिल नहीं किया कि वह उसको मना करे सो उसी शाम उन दोनों की शादी हो गयी।

शादी के बाद जब सब लोग चले गये और वे दोनों अकेले रह गये तो राजकुमार ने राजकुमारी से कहा — "प्रिये तुमको पता होना चाहिये कि मेरे ऊपर जादू पड़ा हुआ है।

एक जादूगरनी[19] जिसके अपनी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी उसकी यह इच्छा थी कि वह अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दे। पर मैंने जब उससे मना कर दिया तो उसकी मॉ ने अपनी ताकत से मुझे दिन में भालू बना दिया।

मुझको उसी हालत में रहना था जब तक कि कोई लड़की अपनी मरजी से मुझसे शादी न कर ले और पॉच साल तक मेरे साथ रहने के दुख न सह ले।"

जब राजकुमारी सुबह सो कर उठी तो उसको अपने बराबर में अपना पति दिखायी नहीं दिया। उसका सारा दिन बड़ा खराब बीता। वह बहुत दुखी रही।

पर जैसे ही शाम को उस शानदार कमरे के लैम्प जले जहॉ वह सिल्क के सोफा पर बैठी हुई थी तो कमरे के दरवाजे खुल गये और लो अगले ही मिनट वह राजकुमार तो उसके पास बैठा हुआ था। इस तरह उसने एक और शाम उसके साथ हॅसी खुशी बितायी।

पर उसने राजकुमारी को सावधान किया कि जब भी वह उससे थक जायेगी या फिर उसका उससे विश्वास उठ जायेगा तो वे हमेशा

[19] Translated for the word "Sorceress"

के लिये अलग हो जायेंगे और उसको उस जादूगरनी की बेटी से शादी करनी पड़ेगी।

बाद में राजकुमारी को उसके दिन में न होने की आदत पड़ गयी। इस तरह से दिन में अलग होते और रात को मिलते उन्होंने **12** महीने बिता दिये।

इसके बाद उनके एक बहुत ही सुन्दर राजकुमार पैदा हुआ। पहले तो वह राजकुमार से शादी करके खुश थी ही पर अब तो वह दोगुनी खुश थी क्योंकि पहले तो उसके पास दिन के साथ के लिये कोई नहीं था पर अब तो उसका बेटा उसके पास था।

दिन खुशी खुशी बीत रहे थे कि एक दिन जब वह अपने पति और बच्चे के साथ खिड़की खोल कर बैठी हुई थी क्योंकि रात बहुत सीली सीली थी कि एक मादा गरुड़ आयी और बच्चे को अपने चोंच में दबा कर ऊपर आसमान में ले गयी।

यह देख कर वह बहुत ज़ोर से चिल्लायी और बच्चे के पीछे खिड़की से बाहर कूदना चाहती थी कि राजकुमार ने उसको पकड़ लिया और उसकी तरफ बड़े गम्भीर तरीके से देखा।

उसके दिमाग में वह सब घूम गया जो राजकुमार ने उससे शादी के ठीक बाद कहा था सो उसने अपने आपको रोने और शिकायत करने से रोक लिया जो उसकी जबान पर उस गरुड़ को अपने बच्चे को आसमान में ले जाते देख कर आ गयी थीं।

अब उसके दिन फिर से बड़े अकेले गुजरने लगे। इस तरह से **12** महीने फिर बीत गये कि अबकी बार उसने एक बेटी को जन्म दिया। इस बार उसने सोचा कि वह उसका खास खयाल रखेगी उस पर कड़ी निगाह रखेगी। इसलिये वह कोई भी खिड़की कुछ इंचों से ज़्यादा खोल कर नहीं रखती थी।

पर उसकी सारी सावधानियॉ बेकार गयीं।

एक शाम जब वे सब खुशी खुशी बैठे थे और राजकुमार खुशी खुशी अपनी बेटी को अपनी बॉहों में झुला रहा था कि एक सुन्दर सा ग्रेहाउन्ड कुत्ता उनके सामने आ खड़ा हुआ और इससे पहले कि वे यह जानें कि वह क्या करने वाला है उसने राजकुमार के हाथ से उसकी बेटी को छीना और दरवाजे में से निकल कर बाहर भाग गया।

इस बार वह अपने आपको चिल्लाने से न रोक सकी। वह चिल्लायी और कुत्ते के पीछे कमरे के बाहर भागी पर उसके बराबर वाले कमरे में उनके कुछ नौकर थे तो उनसे पूछने पर पता चला कि वहॉ से तो कोई कुत्ता या कोई बच्चा नहीं गया था।

उसे लगा कि यह सब उसके पति की ही गलती थी फिर भी उसने अपने आपको काबू में रखा और उसको कोई दोष नहीं दिया।

समय फिर गुजरा और उसने तीसरे बच्चे को जन्म दिया। इस बार वह किसी भी खिड़की या दरवाजे को ज़रा सा भी खोलने की

इजाज़त नहीं देती थी। पर वह हर समय तो बच्चे को भी अपने पास नहीं रख सकती थी।

एक शाम वे तीनों आग के पास बैठे हुए थे कि एक स्त्री उनके सामने प्रगट हुई। राजकुमारी की ऑखों में डर दिखायी देने लगा। उसने उस स्त्री की तरफ देखा।

जब वह उस स्त्री की तरफ देख रही थी तो उस स्त्री ने एक शाल में बच्चे को लपेटा जो अपने पिता की गोद में बैठा हुआ था और या तो फिर वह जमीन में समा गयी और या फिर चिमनी से हो कर चली गयी। इस बार मॉ ने एक महीने तक बिस्तर पकड़ लिया।

जब उसकी तबियत कुछ ठीक होने लगी तब एक दिन उसने अपने पति से कहा — "प्रिय मुझे लगता है कि अगर मैं अपने माता पिता और बहिनों से मिल लूॅ तो शायद मुझे कुछ अच्छा लगे। अगर तुम मुझे कुछ दिन के लिये वहॉ जाने की इजाज़त दे दो तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

राजकुमार बोला — "ठीक है मैं तुमको जाने दे सकता हूॅ और जब भी तुम वहॉ से लौटना चाहो लौट सकती हो। इसके लिये बस तुमको यह करना है कि जब तुम रात को लेटो तो ऐसी इच्छा करना तो तुम अगले दिन अपने घर में ही उठोगी।

इसके अलावा जब तुम्हें वहॉ से यहॉ आना हो तब भी तुम ऐसा ही करना तो तुम यहॉ उठोगी।"

उसने उसी रात ऐसी इच्छा की और अगले दिन वह अपने माता पिता के महल में अपने पुराने कमरे में उठी। उसने घंटी बजायी तो उसके माता पिता और उसकी शादीशुदा बहिनें सभी वहॉ पर मौजूद थे।

वे सब आपस में खूब बात करते रहे और हॅसते रहे जब तक कि वे सब पहले की तरह से बरताव नहीं करने लगे। उसने उनको सब बताया कि वह वहॉ कैसे रह रही थी। पर वे लोग नहीं जानते थे कि वे ऐसे हालात में उसको क्या सलाह दें।

वह अभी भी अपने पति को बहुत प्यार करती थी और उसको यह भी यकीन था कि इन बच्चों के इस तरह से जाने में उसके पति का कोई हाथ नहीं था। पर फिर भी उसको डर था कि अगर उसका कोई और बच्चा भी होगा तो वह भी उससे छीन लिया जायेगा।

उसकी मॉ और बहिनों ने एक अक्लमन्द स्त्री से सलाह की जो उनके महल में अंडे दिया करती थी। उनको उसकी अक्लमन्दी में बहुत विश्वास था।

उसने उनको बताया कि उसका एक ही इलाज था और वह था राजकुमार की भालू की खाल पाना जिसको कि राजकुमार रोज सुबह को पहनता था और उसको जला देना।

इस तरह खाल जला देने से उसका जादू टूट जायेगा और उसके बाद उसका रात को आदमी बनना और दिन में भालू बनना हमेशा के लिये छूट जायेगा।

यह सुन कर उन सबने उसको यही करने के लिये मना लिया और उसने भी उनसे वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगी।

आठ दिन अपने माता पिता के पास रहने के बाद अब उसको अपने पति से मिलने की इच्छा होने लगी सो उसी रात उसने ऐसी इच्छा प्रगट की और जब वह तीन घंटे बाद उठी तो वह अपने पति के घर में थी। वह खुद भी उसका इन्तजार कर रहा था।

वे फिर बहुत दिनों तक खुश खुश रहे। अब उसने सोचना शुरू किया कि अब उसको अपने पति का सुबह को उसको छोड़ना क्यों बुरा नहीं लगता था।

और उसको यह पता क्यों नहीं चला कि अब वह उसको सोने से पहले सोने के प्याले में जो शराब देता था वह अब उसे देना क्यों नहीं भूलता था।

एक दिन उसने सोच लिया कि वह आज कुछ भी नहीं पियेगी और देखेगी कि क्या होता है। सो जब उसके पति ने उसको पीने के लिये कुछ दिया तो हालॉकि उसने उसे पीने का बहाना किया पर उसे उसने पिया नहीं।

उसने देखा कि ऐसा करने से वह सुबह को भी काफी जागी हुई थी। हालॉकि सुबह को उसने अपनी ऑखें बन्द कर रखी थीं फिर भी उसने देखा कि उसका पति एक दीवार में से हो कर बाहर निकल गया।

उसके पति ने उसको पिछली रात जो सोने वाली दवा दी थी उसमें से उसने कुछ बूँदें बचा कर रख ली थीं सो अगली रात को उसने वे अपने पति के प्याले में डाल दीं। इससे उसका पति रात भर गहरी नींद सोता रहा।

वह खुद आधी रात को उठी और उसी दीवार में से हो कर उसके दूसरी तरफ निकल गयी। वहाँ उसको एक कोने में कत्थई भालू की एक बहुत सुन्दर खाल टँगी हुई मिल गयी।

उसने वह खाल वहाँ से चुरा ली और उसको ले कर नीचे आग के पास गयी और आग में डाल दी। धीरे धीरे वह खाल जल कर राख हो गयी।जल जाने के बाद वह वापस आ कर सो गयी।

अगर वह **100** साल भी ज़िन्दा रहती तो वह कभी नहीं भूलती कि वह अगली सुबह कैसे उठी। कि कैसे उसका पति उसकी तरफ दुख और परेशानी से देख रहा था।

वह बोला — "ओ नाखुश स्त्री। तुमने तो हम दोनों को हमेशा के लिये अलग कर दिया। तुम पाँच साल तक धीरज क्यों नहीं रख सकीं। अब चाहे मुझे अच्छा लगे या न लगे पर अब मुझे उस जादूगरनी के महल की तीन दिन की यात्रा पर जाना पड़ेगा और उसकी बेटी से शादी करनी पड़ेगी।

वह खाल जो मेरी रक्षा करती वह तुमने जला कर राख कर दी। वह अंडे वाली स्त्री जिसने तुम्हें यह सलाह दी थी कि मेरी खाल जला दो वह तो खुद ही एक जादूगरनी थी।

मैं तुम्हें खुद कोई सजा नहीं दूँगा। उसके बिना भी तुम्हारी सजा काफी कठिन होगी। अच्छा हमेशा के लिये विदा।"

उसने उसको आखिरी बार चूमा और जितनी जल्दी वहॉ से जा सकता था चला गया।

राजकुमारी उसके पीछे से चिल्लायी पर फिर उसने देखा कि उसका चिल्लाना तो बेकार था क्योंकि वह तो वहॉ से जा चुका था सो उसने कपड़े पहने और उसके पीछे पीछे चल दी।

राजकुमार बीच में कहीं रुका भी नहीं और कहीं ठहरा भी नहीं। न ही उसने पीछे मुड़ कर देखा। पर फिर भी वह राजकुमारी की ऑखों से ओझल नहीं हुआ। जब वह पहाड़ी पर चढ़ रहा था तब वह खाई में थी। और जब वह खाई में था तब वह पहाड़ी पर थी।

चलते चढ़ते उतरते वह अब बेजान सी हो चली थी कि सूरज डूबते समय उसने देखा कि राजकुमार एक गली में मुड़ गया और एक छोटे से घर में घुस गया। वह भी उसके पीछे पीछे उस घर के अन्दर चली गयी।

वहॉ जा कर उसने क्या देखा कि उसके घुटनों पर एक सुन्दर सा लड़का बैठा हुआ है। वह उसको अपने गले से लगा रहा था और उसको चूम रहा था।

"ओ मेरी प्यारी यह है तुम्हारा सबसे बड़ा बच्चा।" फिर उसने एक स्त्री की तरफ इशारा कते हुए कहा जो उसकी तरफ मुस्कुराते

हुए देख रही थी "यह वह मादा गरुड़ है जो इसको ले कर उड़ गयी थी।

पल भर के लिये वह अपने सारे दुख भूल गयी। उसने अपने बच्चे को गले लगाया। खुशी के मारे उसकी ऑखों में ऑसू आ गये।

उस स्त्री ने उनके पैर धोये और एक मरहम सा लगाया जिससे उनके पैरों का दर्द दूर हो गया और उसने उनके पैरों को डेज़ी के फूलों की तरह ताज़ादम कर दिया।

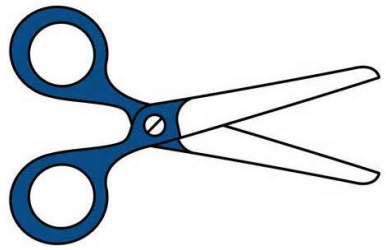

अगली सुबह सूरज निकलने से पहले ही राजकुमार उठ गया और आगे जाने के लिये तैयार था। उसने राजकुमारी से कहा "लो यह कैंची लो शायद यह तुम्हारे काम आये। इस कैंची से तुम जो चीज़ भी तुम काटोगी वह सिल्क में बदल जायेगी।

जैसे ही सूरज निकल आयेगा मैं तुम्हारी और बच्चों की सारी यादें भूल जाऊँगा पर सूरज छिपने के बाद में मुझे वे सब याद आ जायेंगी। अच्छा विदा।"

कह कर वह फिर चला गया। अपने बच्चे को वहीं छोड़ कर राजकुमारी भी उसके पीछे पीछे चल दी। वह अभी बहुत दूर नहीं गयी थी कि वह उसको फिर से दिखायी दे गया।

उनके साथ आज भी वही हुआ जो उनके साथ पिछले दिन हुआ था। सुबह को उनकी परछाइयॉ उनके आगे आगे जा रही थीं और शाम को उनके पीछे पीछे जा रही थीं।

राजकुमार भी बीच में कहीं नहीं रुका तो राजकुमारी भी बीच में कहीं नहीं रुकी। जब सूरज डूबने को था तो राजकुमार फिर से एक गली में मुड़ा और फिर से एक घर में घुस गया।

राजकुमारी भी उसके पीछे पीछे उस घर में घुस गयी। वहॉ उनको उनकी बेटी मिल गयी तो वहॉ एक बार फिर सुबह तक खूब आनन्द रहा।

अगले दिन फिर तीसरे दिन की यात्रा शुरू हुई। लेकिन यात्रा शुरू करने से पहले राजकुमार ने राजकुमारी को एक कंघा दिया और कहा कि जब भी वह उसको अपने बालों में फिरायेगी तो उसके सिर में से हीरे और मोती गिरेंगे।

पिछले दिन के सूरज डूबने से ले कर आज तक के सूरज निकलने तक उसको सब कुछ याद था पर अब सूरज निकलने से ले कर सूरज डूबने तक वह बस जादू के ज़ोर से ही यात्रा करता रहा और उसने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा।

इस रात वे अपने सबसे छोटे बच्चे के पास आये और अगली सुबह राजकुमार राजकुमारी से आखिरी बार बोला — "ओह मेरी बेचारी पत्नी। लो तुम यह सुनहरे धागे की रील लो। इसमें यह

धागा कभी खत्म नहीं होगा। और यह लो हमारी शादी की आधी अँगूठी।

अगर तुम किसी तरह से मेरे घर पहुँच जाओ और अपनी यह आधी अँगूठी मेरी आधी अँगूठी से जोड़ दो तो तुम मुझे याद आ जाओगी।

उधर उस पार एक जंगल है। जैसे ही मैं उस जंगल में घुसूँगा तो हमारे बीच जो कुछ भी हुआ है मैं वह सब कुछ भूल जाऊँगा जैसे मैं कल ही पैदा हुआ होऊँ। अच्छा बाई बाई मेरी प्यारी पत्नी और बच्चे।"

उसी समय सूरज निकल आया और वह जंगल की तरफ चलता चला गया।

राजकुमारी ने उस जंगल को उसके घुसने से पहले खुलते और उसके जाने के बाद बन्द होते देखा तो वह तो वहाँ घुस ही नहीं सकी क्योंकि वहाँ पहुँचने पर उसको एक पत्थर की दीवार के सिवा और कुछ नहीं मिला।

वह बेचारी हाथ मलती रही और आँसू बहाती रही। फिर वह कुछ सँभली और बोली — "ओ जंगल मैं तुम्हें अपनी तीनों भेंटों की कसम देती हूँ – कैंची कंघी और रील, कि तुम मुझे अन्दर जाने दो।"

और लो वह जंगल तो खुल गया। राजकुमारी उसमें एक रास्ते पर से हो कर अन्दर चली गयी। वह रास्ता एक महल तक जाता

था सो वह उस रास्ते पर हो कर महल तक आ पहुँची। वहाँ उस जंगल के किनारे पर महल के साथ साथ एक लान था और एक लकड़हारे का मकान था।

वह लकड़हारे के मकान में चली गयी और लकड़हारे और उसकी पत्नी से उसको वहाँ कुछ काम देने के लिये कहा।

पहले तो उन्होंने मना कर दिया कि वह उसको कोई काम नहीं दे सकते पर राजकुमारी ने कहा कि उसको उस काम की कोई मजदूरी नहीं चाहिये बल्कि जब भी उनको चाहिये तब वह खुद उनको हीरे मोती सिल्क के कपड़े सोने का धागा आदि देगी।

यह सुन कर उन्होंने उसको अपने घर में जगह दे दी।

इधर बहुत जल्दी ही राजकुमारी ने सुना कि वहाँ एक नया नया राजकुमार आया है और महल में राजकुमारी के साथ रह रहा है। वह बाहर बहुत कम निकलता था और घर में भी बहुत कम बोलता था और दुखी रहता था। ऐसा लगता था जैसे वह किसी चीज़ की तलाश में हो।

उधर महल में रहने वाले नौकरों और दूसरे लोगों ने सुना कि बाहर लकड़हारे के मकान में एक बहुत सुन्दर लड़की आयी है तो उन्होंने उसको अपने खराब बरताव से चिढ़ाना शुरू कर दिया।

वहाँ का हैड नौकर उसको कुछ ज़रा ज़्यादा ही तंग करता था सो एक दिन उसने उस हैड नौकर को अपने साथ चाय पीने के लिये

बुलाया। ओह वह तो इस बात से कितना खुश हो गया और महल में जा कर उसने दूसरे नौकरों के बीच अपनी कितनी शान बघारी।

शाम हुई तो हैड नौकर उस राजकुमारी के घर गया तो वहाँ उसको राजकुमारी के कमरे में ले जाया गया। लकड़हारा और उसकी पत्नी राजकुमारी से बहुत खुश थे सो उन्होंने उसको रहने के लिये दो कमरे दे रखे थे।

वह वहाँ सीधा बैठ गया और महल में किये गये अपने कारनामों की बड़ाई करने लगा। राजकुमारी उसके लिये चाय और टोस्ट बनाने लगी।

इतने में राजकुमारी ने उससे कहा — "क्या तुम खिड़की में से हाथ बढ़ा कर मेरे लिये पास में लगे पेड़ की एक दो डंडियाँ तोड़ दोगे।"

वह तुरन्त ही उठा और पेड़ की डंडियाँ तोड़ने के लिये अपना सिर और हाथ बाहर निकाला कि तभी राजकुमारी फुसफुसायी "मेरी भेंटों की कसम तुम्हारे सिर पर दो सींग उग आयें।"

जैसे ही उसने यह कहा नौकर के कानों के दोनों तरफ एक एक सींग उग आया और दोनों सींग उसके सिर के पीछे जा कर मिल गये। बेचारा नौकर।

वह कितना चिल्लाया कितना गरजा। उसकी चिल्लाहट और गरजने की आवाज सुन कर महल के सारे नौकर बाहर आ गये।

हॅसते हुए मुस्कुराते हुए गुस्सा होते हुए वे सब लोग बरतन हाथ में ले कर उन्हें बजाते चले आ रहे थे।

उधर वह हैड नौकर राजकुमारी को बुरा भला कह रहा था। गुस्से के मारे उसकी ऑखें बाहर निकली पड़ रही थीं। उसका चेहरा काला पड़ गया था और वह पागलों की तरह अपने पैर पीछे की तरफ फेंक रहा था।

आखीर में राजकुमारी को उसके ऊपर दया आ गयी और उसने उसके ऊपर से अपना जादू हटा लिया। जादू के हटते ही उसके सींग नीचे गिर पड़े।

वह राजकुमारी को तुरन्त ही मार देता पर उसको अपने आप में इतनी कमजोरी लग रही थी कि वह अपने आप उठ कर महल तक भी नहीं जा सका। उसके साथी नौकर उसको उठा कर महल ले गये।

किसी तरह यह कहानी राजकुमार के कानों में पड़ी तो वह भी उस राजकुमारी को देखने लिये उस तरफ घूमता घूमता चला आया।

उस समय राजकुमारी एक देहातिन की पोशाक पहने थी और खिड़की पर बैठी कुछ सिल रही थी पर इससे उसकी सुन्दरता में कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। राजकुमार ने उसको अच्छी तरह से देखा तो कुछ परेशान सा हो गया।

जादूगरनी की बेटी ने भी उसके बारे में सुना तो वह भी उस आश्चर्यजनक लड़की को देखने के लिये उधर आयी। उसने देखा कि राजकुमारी तो बॉसी कागज पर गाउन का नमूना काट रही थी।

पर जैसे जैसे वह कागज काटती जाती थी वह कागज सिल्क के टुकड़ों बदलता जाता था। और वह सिल्क तो इतनी बढ़िया थी कि उतनी बढ़िया सिल्क उसने पहले कभी देखी नहीं थी।

जादूगरनी की बेटी ने उसको लालची ऑखों से देखा और उससे पूछा — "तुम इस कैंची की क्या कीमत लोगी?"

राजकुमारी बोली — "मुझे इस कैंची की कोई कीमत नहीं चाहिये यह मैं आपको ऐसे ही दे दूँगी अगर आप मुझे राजकुमार के बराबर वाले कमरे में एक रात सोने दें तो।"

यह सुन कर तो उस घमंडी लड़की को बहुत गुस्सा आ गया और वह उसको कुछ ऐसा वैसा कहने ही वाली थी पर वह कैंची तो चलती ही जा रही थी और उसमें से और चढ़िया सिल्क निकलती आ रही थी जिसको देख कर उसकी तो ऑखें फटी की फटी रही जा रहीं थीं। सो उसने कैंची के लालच में राजकुमारी ने जो मॉगा उसको हॉ कर दिया।

जब रात हुई तो राजकुमारी को महल ले जाया गया और उसको राजकुमार के बराबर वाले कमरे में लिटा दिया गया। राजकुमार तब तक इतनी गहरी नींद सो चुका था कि उसको जगाया नहीं जा सकता था।

रोते हुए और सिसकियॉ भरते हुए राजकुमारी ने गाया —

मैं चार साल तक तुम्हारे साथ शादी करके रही
मैंने तुम्हें तीन प्यारे प्यारे बच्चे दिये
ओ नोर्वे के कत्थई भालू मेरी तरफ देखो तो

पर वह तो गहरी नींद सो रहा था। उठा ही नहीं। सुबह की पहली रोशनी के साथ जादूगरनी की वह घमंडी बेटी वहॉ आ गयी और उसको वहॉ से बाहर निकाल दिया।

ज्ब वह महल के बाहर जा रही थी तो वह हैड नौकर जिसके सिर पर राजकुमारी ने सींग उगाये थे उसको अपनी जीभ निकाल कर चिढ़ा रहा था।

सो अभी तक तो किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया था पर अगले दिन राजकुमार फिर से उसके घर की तरफ आया। उसने उसको देखा और मुस्कुराकर नमस्ते की जैसे कि कोई राजकुमार किसी किसान की बेटी को करता और चला गया।

कुछ देर बाद ही जादूगरनी की बेटी वहॉ आयी तो उसने देखा कि राजकुमारी अपने बालों में कंघी कर रही थी और उसमें हीरे मोती गिर रहे थे। उसको देख कर उसके मन में लालच आ गया।

सो फिर एक सौदा हुआ और राजकुमारी फिर से राजकुमार के बराबर वाले कमरे में सोयी और एक और दुखी रात वहॉ गुजारी क्योंकि वह राजकुमार को जगा ही नहीं सकी।

सुबह को उसे फिर वह कमरा राजकुमार से बिना मिले ही छोड़ना पड़ा। सो उसकी यह दूसरी रात भी बेकार गयी।

तीसरे दिन राजकुमार फिर से राजकुमारी की तरफ आया और इस बार उस अनजान स्त्री से बात करने के लिये वहॉ रुका। उसने उससे पूछा कि क्या वह उसके लिये कुछ कर सकता था। वह बोली "हॉ तुम कुछ कर सकते हो।"

उसने राजकुमार से पूछा कि क्या पहले कभी वह रात को उठता था। तो उसने उसे बताया कि पहले तो वह उठता था पर पिछली दो रातों में वह सपने में कुछ मीठा सा संगीत सुन रहा था सो वह जाग नहीं सका।

वह आवाज भी उसकी जानी पहचानी थी जिसको वह बहुत पहले जानता था और ऐसा लगता था कि वह आवाज किसी दूसरी दुनियॉ से आ रही थी।

राजकुमारी ने पूछा "क्या सोने से पहले उसने कुछ पिया था।"

वह बोला — "हॉ मेरी पत्नी दो रात से मुझे पीने के लिये कुछ दे रही है। अब उसमें सोने की दवा है या नहीं यह मुझे नहीं पता।"

राज्कुमारी बोली — "ओ राजकुमार जैसा कि तुमने मुझसे अभी कहा कि मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सकता हूॅ क्या।" तो तुम मेरे लिये यह करो कि आज की रात तुम कोई भी पेय पदार्थ न पियो।"

राजकुमार बोला — "ठीक है मैं नहीं पियूँगा।" और घूमने के लिये आगे चला गया।

उसके जाने के बाद जादूगरनी की बेटी भी उधर किसी लालच में आ निकली। इस बार उसने देखा कि वह लड़की अपने हाथ में एक रील लिये बैठी है और उसमें से सोने का धागा खोल रही है।

रील को देख कर उसने राजकुमारी से तीसरा सौदा किया। राजकुमारी ने फिर से उससे राजकुमार के बराबर वाले कमरे में सोने की इजाज़त माँगी और वह सोने के धागे वाली रील उसके बदले में उसको दे दी।

उस रात राजकुमार शाम से ही अपने बिस्तर में जा कर लेट गया। उसका दिमाग उस दिन कुछ अशान्त था। तभी दरवाजा खुला और राजकुमारी अन्दर आयी। आ कर वह उसके पास बैठ गयी और गाने लगी —

मैं चार साल तक तुम्हारे साथ शादी करके रही
मैंने तुम्हें तीन प्यारे प्यारे बच्चे दिये
ओ नोर्वे के कत्थई भालू मेरी तरफ देखो तो

राजकुमार बोला — "नौर्वे के कत्थई भालू" – तुम्हारी यह बात मेरी समझ में नहीं आयी। कौन है यह।"

राजकुमारी बोली — "राजकुमार क्या तुम्हें याद नहीं है कि मैं चार साल तक तुम्हारी पत्नी थी।"

"नहीं मुझे तो बिल्कुल भी याद नहीं है। पर मुझे यकीन है कि तुम जरूर रही होगी और मेरी इच्छा है कि ऐसा जरूर हुआ होगा।"

"क्या तुम्हें याद नहीं है कि फिर हमारे तीन बच्चे हुए जो अभी भी ज़िन्दा हैं।"

"अच्छा? तो तुम मुझे उनके दिखाओ। मेरा दिमाग तो परेशान है।"

"तुम अपनी शादी की आधी अँगूठी की तरफ देखो जो तुम्हारे गले में लटकी हुई है और उसको इस आधी अँगूठी के साथ मिला कर देखो।"

जैसे ही राजकुमार ने ऐसा किया उस पर पड़ा जादू टूट गया। उसकी सारी यादें वापस आ गयीं। उसने अपनी पत्नी के गले में अपनी बाँहें डाल दीं और दोनों बहुत ज़ोर से रो पड़े।

इसी के साथ ही पूरे महल के गिरने की आवाज भी सुनायी दी सो महल का हर आदमी सावधान हो गया और महल में से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा।

राजकुमार और राजकुमारी भी वहाँ से बाहर की तरफ भागे। जब सब उसमें से बाहर आ गये तो वह महल टूट कर बिखर गया। उसके टूट कर बिखरने से मीलों तक की जमीन काँप गयी।

उसके बाद फिर किसी ने जादूगरनी और उसकी बेटी को वहाँ कहीं नहीं देखा।

जल्दी ही राजकुमार और राजकुमारी को उनके बच्चे भी मिल गये। वे उनको ले कर अपने महल चले गये। आयरलैंड, मुन्स्टर और उल्स्टर के राजा और उनकी पत्नियॉ उनसे मिलने आये और उनसे मिल कर बहुत खुश हुए।

भगवान करे जैसे वे खुश हुए सब लोग खुश रहें।

6 सूरज के पूर्व में और चॉद के पश्चिम में[20]

सूअर राजा जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों[21] की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही गरीब चरवाहा रहता था। उसके कई बच्चे थे जिनको वह न तो पेट भर खाना ही खिला पाता था और न ही उनको ठीक तरह से कपड़े ही पहना पाता था।

हालॉकि उसके सारे बच्चे बहुत प्यारे थे पर सबसे प्यारी उसकी सबसे छोटी बेटी थी। वह सबमें इतनी सुन्दर थी कि बस उसके बराबर का सुन्दर और कोई नहीं था।

साल का पतझड़ का मौसम आ गया था तो एक दिन बृहस्पतिवार की शाम को मौसम बहुत ही खराब और तूफानी हो गया।

चारों तरफ ॲधेरा छा गया हवा बहुत तेज़ चलने लगी और बारिश पड़ने लगी। उसके मकान की दीवारें तक हिलने लगीं। वे सब आग के चारों तरफ बैठ गये और कुछ कुछ करने लगे।

---

[20] East o' the Sun and the West o' the Moon – a folktale from Norse Countries, Europe.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn14.htm
Taken from "Popular Tales from the Norse". By George Webbe Dasent. 1904.

[21] Norse, or Nordic, or Scandinavian countries are five in number situated on the Northernmosr coast of Europe – Denamrk, Finland, Iceland, Norway and Sweden.

पर तभी अचानक किसी ने खिड़की के शीशे पर तीन बार दस्तक दी। पिता उठ कर बाहर यह देखने के लिये गया कि क्या मामला था और जब वह दरवाजे के बाहर निकला तो उसने क्या देखा कि वहॉ तो एक बहुत बड़ा सफेद भालू खड़ा था।

सफेद भालू बोला — "गुड ईवनिंग[22] जनाब।"

आदमी बोला — "आपको भी।"

सफेद भालू बोला — "क्या आप अपनी सबसे छाटी बेटी मुझे देंगे? अगर आप मुझे उसे दे देंगे तो मैं आपको उतना ही अमीर बना दूँगा जितने कि आप अभी गरीब हैं।"

अब वह आदमी अमीर तो होना चाहता था पर फिर भी उसने सोचा कि इस बारे में पहले वह अपनी बेटी से बात कर ले। सो वह अन्दर गया और सबको बताया कि बाहर एक सफेद भालू खड़ा है जो यह वायदा करता है कि उनको बहुत अमीर बना देगा अगर वह उसको अपनी सबसे छोटी बेटी दे दे तो।

लड़की तुरन्त बोली "नहीं।" वह कुछ भी कहे पर वह उसके पास नहीं जायेगी। सो वह आदमी बाहर गया और उस सफेद भालू से कहा कि वह अगले बृहस्पतिवार को फिर आये तभी वह उसकी बात का जवाब देगा।

इस बीच उसने अपनी बेटी से बात की और उससे बार बार यही कहता रहा कि इसके बाद वे लोग भी बहुत अमीर हो जायेंगे

[22] Normal greeting in English language in the evening time.

और वह खुद भी बहुत अच्छे से रहेगी इसलिये उसको सफेद भालू की बात मान लेनी चाहिये। आखिर वह मान गयी।

उसने अपने फटे कपड़ों को धोया और उनकी मरम्मत की। अपने आपको भी ठीक से सजाया सँवारा और चलने के लिये तैयार हो गयी। उसके पास कुछ ज़्यादा सामान ही नहीं था सो उसको वहाँ से जाने में कोई खास मुश्किल नहीं पड़ी।

अगले बृहस्पतिवार की शाम को वह सफेद भालू उसको लेने के लिये आया। वह अपनी पोटली ले कर उसकी पीठ पर चढ़ गयी और भालू उसको ले कर वहाँ से चल दिया।

कुछ देर चलने के बाद सफेद भालू ने पूछा — "क्या तुम डर रही हो?"

"नहीं। मैं नहीं डर रही।"

भालू फिर बोला — "खैर तुम मेरा यह लम्बे बालों वाला कोट कस कर पकड़ लो और बस फिर तुमको डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

उसके बाद वे बहुत दूर तक चलते रहे। आखिर वे एक पहाड़ी के पास आ गये। उस पहाड़ी की दीवार पर सफेद भालू ने एक दस्तक दी और एक दरवाजा खुल गया।

वे उस दरवाजे के अन्दर घुस गये तो वे एक किले में आ गये। उस किले में बहुत सारे कमरे थे जिनमें सबमें रोशनी हो रही थी। सब कमरे सोने चाँदी की तरह से चमक रहे थे।

एक कमरे में एक जितनी शानदार खाने की मेज हो सकती थी उतनी शानदार खाने की मेज तैयार लगी रखी थी।

सफेद भालू ने लड़की को एक चॉदी की घंटी दी और कहा कि जब भी उसको किसी चीज़ की जरूरत हो तो वह उसको बजा दे। वह चीज़ उसको तुरन्त ही मिल जायेगी।

उसने पेट भर खाना खाया। शाम के कपड़े पहिने। अपनी इस लम्बी यात्रा के बाद वह थक गयी थी सो उसको नींद आने लगी। उसको लगा कि वह सो जाये सो उसने घंटी बजायी।

उसने वह घंटी बस मुश्किल से पकड़ी ही होगी कि वह एक कमरे में आ गयी जहॉ एक सफेद बिस्तर लगा हुआ था। उस पर सफेद रेशमी तकिये रखे थे और कमरे में सुनहरी झालर वाले सफेद परदे लगे हुए थे। उस कमरे को देख कर उसका मन करने लगा कि वह वहॉ सो जाये।

उस कमरे में जो कुछ भी रखा हुआ था या तो वह सोने का था या फिर चॉदी का। पर जब वह बिस्तर पर लेट गयी और उसने रोशनी बुझा दी तो उसके कमरे में एक आदमी आया और उसके बराबर में आ कर लेट गया।

यह वह सफेद भालू था जो उसको वहॉ ले कर आय था। वह रात को अपना जंगली रूप निकाल देता था और दिन में फिर से भालू बन जाता था। पर उस लड़की ने उसे कभी नहीं देखा क्योंकि

वह वहॉ तभी आता था जब वह लड़की अपनी रोशनी बुझा देती थी। और इससे पहले कि दिन निकले वह वहॉ से चला जाता था।

इस तरह कुछ दिन तक सब कुछ खुशी खुशी चलता रहा पर कुछ समय बाद वह लड़की कुछ चुप चुप और दुखी सी रहने लगी क्योंकि वह वहॉ सारा दिन अकेली रहती। उसकी इच्छा करती कि वह अपने माता पिता और बहिन और भाइयों को देखे।

सो एक दिन जब सफेद भालू ने उससे पूछा कि क्या उसको वहॉ किसी चीज़ की कमी महसूस होती थी तो वह बोली कि वहॉ वह बहुत अकेला महसूस करती थी।

उसकी इच्छा थी कि वह अपने माता पिता और बहिन और भाइयों को देखे। इसी लिये वह अपने आपको बहुत अकेला और दुखी महसूस करती थी।

भालू बोला — "यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है। मैं तुमको उनसे मिलवा लाता हूँ। पर तुम मुझसे एक वायदा करो कि तुम अपनी मॉ से कभी अकेले में बात नहीं करोगी। तुम उनसे केवल तभी बात करोगी जब और भी लोग वहॉ सुनने के लिये होंगे।

क्योंकि नहीं तो वह तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुमसे बात करने के लिये तुमको एक अकेले कमरे में ले जायेगी। तुम इस बात का ख्याल रखना कि वह ऐसा न करे नहीं तो हमारे और तुम्हारे दोनों के ऊपर कुछ न कुछ बुरा होगा।"

सो एक रविवार को सफेद भालू आया और लड़की से बोला कि वे उस दिन उसके माता पिता से मिलने जा सकते थे। सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों चल दिये। वे बहुत देर तक और बहुत दूर तक चलते रहे।

आखिर वे एक बहुत ही शानदार घर पर आये जहॉ घर के बाहर उसके भाई बहिन इधर उधर भाग रहे थे और खेल रहे थे। सब कुछ देखने में बहुत सुन्दर लग रहा था। लड़की वह सब देख कर बहुत खुश हो गयी।

भालू बोला — "अब तुम्हारे माता पिता यहॉ रहते हैं। पर जो मैंने तुमसे कहा है उसे भूलना नहीं नहीं तो तुम हम दोनों को बदकिस्मत बना दोगी।"

भगवान उसकी रक्षा करे वह नहीं भूलेगी। जब वह घर पहुॅच गयी तो सफेद भालू पीछे मुड़ा और उसको वहीं छोड़ कर चला गया।

जब वह अपने माता पिता से मिली तो सब लोग उससे मिल कर बहुत खुश हुए। उस समय किसी के दिमाग में यह ही नहीं आया कि उसने उनको यह सुख देने के लिये कितना क्या कुछ किया है तो उसके लिये वे उसको धन्यवाद भी दे दें।

अब उनके पास वह सब कुछ था जो वह चाहते थे। और जितना अच्छा चाहते थे उतना अच्छा था। वे सब अब यह जानना चाहते थे कि वह जहॉ रहती थी वहॉ वह कैसे रहती थी।

लड़की ने कहा कि वह जहॉ भी रहती थी वहॉ वह बड़े आराम से रहती थी। वहॉ उसको वे सब चीज़ें मिली हुई थीं जिनकी उसको जरूरत थी और इच्छा थी। इसके अलावा उसने उनसे क्या बात की यह तो पता नहीं पर वे उससे ज़्यादा और कुछ नहीं जान सके।

शाम को खाना खाने के बाद जैसा कि सफेद भालू ने उससे कहा था वैसा ही हुआ।

उसकी मॉ उसको अपने सोने वाले कमरे में ले जा कर उससे अकेले में बात करना चाह रही थी। पर उसको सफेद भालू की बात याद थी सो वह उसके साथ उसके सोने वाले कमरे में ऊपर नहीं गयी।

उसने कहा "अब हमें और क्या बात करनी है मॉ।" और यह कह कर उसको वहॉ से हटा दिया। पर किसी तरह से उसकी मॉ ने उसको ऊपर जाने के लिये पटा ही लिया और उसको भी अपनी मॉ को सारी कहानी बतानी ही पड़ी।

उसने मॉ को बताया कि कैसे हर रात जब वह बिस्तर पर सोने के लिये चली जाती थी और रोशनी बुझा देती थी तो एक आदमी आता था और उसके पास आ कर लेट जाता था।

इस तरह से उसने कभी उसको देखा ही नहीं क्योंकि वह सुबह होने से पहले ही उठ जाता था और वहॉ से चला जाता था।

उसके जाने के बाद वह दुखी हो जाती थी क्योंकि वह यकीनन उसको देखना चाहती थी। बस फिर वह सारा दिन वहाँ अकेली ही रहती थी।

उसकी माँ बोली — "मेरी बच्ची तू जिसके साथ सो रही है वह एक ट्रौल[23] भी हो सकता है। पर अब मैं तुझे बताती हूँ कि उस पर नजर कैसे रखनी है।

मैं तुझे टैलो[24] का एक टुकड़ा दूँगी। उसे तू छिपा कर अपने घर ले जाना। वह जब सोया रहे तो उसे जलाना तब तू उसको देख पायेगी पर ध्यान रहे कि उसका गरम टैलो उसके ऊपर न गिरे।

सो उसकी माँ ने उसको टैलो का एक टुकड़ा दिया और वह उसने छिपा कर रख लिया। जब रात हुई तो सफेद भालू वहाँ आया और उसको उसके घर से ले गया।

थोड़ी ही दूर पहुँचने के बाद सफेद भालू ने उससे पूछा कि क्या वह सब हुआ था जो उसने उससे कहा था। वह झूठ नहीं बोल सकी कि वैसा नहीं हुआ था। उसने कहा कि "हाँ हुआ था।"

सफेद भालू आगे बोला — "ध्यान रखना कि अगर तुमने अपनी माँ की सलाह सुनी है तो इसका मतलब है कि तुम हम दोनों

[23] A troll is a supernatural being in Norse mythology and Scandinavian folklore. In origin, troll may have been a negative being in Norse mythology. Beings described as trolls dwell in isolated rocks, mountains, or caves, live together in small family units, and are rarely helpful to human beings.
[24] Tallow is animal fat which does not perish for long time if it is stored airtight. It stays solid at room temperature. So maybe her mother gave her this to burn and warned her not to fell even a drop on the man.

पर बदकिस्मती ले कर आयी हो। और जो कुछ भी हम दोनों के बीच अब तक हुआ है वह सब बेकार हो गया।"

वह बोली कि उसने अपनी मॉ की सलाह नहीं सुनी।

जब वह घर पहुँची तो वह सोने चली गयी और फिर वही पुरानी कहानी शुरू हो गयी। उसके रोशनी बुझाने के बाद एक आदमी आया और उसके पास आ कर लेट गया।

जब काफी रात बीत गयी और उसको लगा कि वह आदमी सो गया है तो वह उठी और उसने वह टैलो जलाया।

टैलो की रोशनी उस आदमी के चेहरे पर पड़ी तो उसने देखा कि वह तो इतना सुन्दर राजकुमार था जितना उसने पहले कभी देखा नहीं था। उसको उससे तुरन्त ही प्यार हो गया।

उसको लगा कि वह उसको चूमे बिना नहीं रह सकेगी और उसने उसको चूम लिया। पर जैसे ही उसने उसको चूमा तो गरम गरम टैलो की तीन बूँदें उसकी कमीज पर गिर पड़ीं और उसकी ऑख खुल गयी।

जागते ही वह चिल्लाया — "यह तुमने क्या किया। तुमने हम दोनों को बदकिस्मत बना दिया। क्योंकि अगर हमने इसी तरह से एक साल पूरा कर लिया होता तो मैं इस शाप से छूट जाता।

मेरी एक सौतेली मॉ है जिसने मुझ पर जादू डाल रखा है जिसकी वजह से मैं दिन में भालू बना रहता हूँ और रात में आदमी

बन जाता हूँ। पर अब हमारे बीच के सारे बन्धन खत्म हो गये। अब मुझे तुम्हारे पास से उसके पास चले जाना चाहिये।

वह एक किले में रहती है जो सूरज के पूर्व में है और चॉद के पश्चिम में है। वहॉ एक राजकुमारी भी है जिसकी नाक तीन ऐल[25] लम्बी है। अब मुझे उसी से शादी करनी पड़ेगी।"

यह सुन कर लड़की को बहुत बुरा लगा और वह रो पड़ी पर इसका और कोई इलाज नहीं था। सफेद भालू को तो जाना ही था। उसने उससे पूछा कि क्या वह उसके साथ जा सकती थी।

सफेद भालू बोला — "नहीं तुम मेरे साथ नहीं जा सकतीं।"

लड़की फिर बोली — "तब फिर तुम मुझे वह तरकीब बताओ जिससे मैं तुम्हें ढूँढ सकूँ। कम से कम यह तो मैं कर सकती हूँ।

भालू बोला — "हॉ यह तुम कर सकती हो पर उस जगह तक जाने का कोई रास्ता नहीं है। क्योंकि वह सूरज के पूर्व में और चॉद के पश्चिम में है और तुम वहॉ का रास्ता कभी नहीं खोज पाओगी।"

अगले दिन जब वह उठी तो राजकुमार और उसका महल दोनों गायब हो चुके थे। वह एक घने जंगल में घास पर लेटी हुई थी। उसके बराबर में उसकी वही फटे पुराने कपड़ों की पोटली रखी हुई थी जो वह अपने पुराने घर से अपने साथ ले कर आयी थी।

[25] Ell is a former measure of length used mainly for textiles, locally variable but typically about 45".

उसने जागने के लिये अपनी ऑखें मलीं और फिर रो पड़ी। वह तब तक रोती रही जब तक वह रोते रोते थक नहीं गयी। फिर वह उठी और चल दी। वह बहुत दिनों तक चलती रही।

चलते चलते वह एक पहाड़ी के पास आ गयी। वहॉ एक बूढ़ी जादूगरनी[26] बैठी हुई थी और वह एक सोने के सेब से उसको उछाल उछाल कर खेल रही थी।

उसने उससे पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

बूढ़ी जादूगरनी ने पूछा — "लेकिन तुम उसको कैसे जानती हो? हॉ यह हो सकता है कि शायद तुम वही लड़की हो जिससे उसको शादी करनी हो।"

"हॉ मैं वही लड़की हूॅ।"

वह बूढ़ी जादूगरनी बोली — "अच्छा तो वह लड़की तुम हो। मैं उसके बारे में केवल इतना ही जानती हूॅ कि वह एक ऐसे महल में रहता है जो सूरज के पूर्व में है और चॉद के पश्चिम में है और ज़्यादा कुछ नहीं। पर वहॉ तक तुम शायद कभी नहीं पहुॅच पाओ।

[26] Translated for the words "Old Hag" – see the picture above.

पर फिर भी तुम मेरा यह घोड़ा उधार ले सकती हो। इस पर सवार हो कर तुम मेरी पड़ोसन के घर चली जाओ। जब तुम वहॉ पहुॅच जाओगी तब वह तुम्हें शायद उसके बारे में कुछ बता सके।

जब तुम वहॉ पहुॅच जाओ तो बस इसके बॉये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा। और हॉ यह सोने का सेब लेती जाओ शायद यह तुम्हारे कभी काम आ जाये।"

लड़की ने उससे सोने का सेब लिया और घोड़े पर सवार हो कर चल दी। वह बहुत देर तक चलती रही कि वह एक दूसरी बूढ़ी जादूगरनी के पास आ पहुॅची।

इस जादूगरनी के हाथ में एक सुनहरी कंघी[27] लगी हुई थी। उसने उससे भी यही पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

उस जादूगरनी ने भी पहली जादूगरनी की तरह ही जवाब दिया कि वह किसी ऐसे राजकुमार को नहीं जानती थी सिवाय इसके कि

[27] Translated for the words "Carding comb". Combing, sometimes known as carding, is a sometimes-fatal form of torture in which iron combs designed to prepare wool and other fibres for woolen spinning are used to scrape, tear, and flay the victim's flesh.

वह एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था।

तुम वहॉ पहुॅचोगी। या तो देर से या फिर कभी नहीं। पर हॉ तुम मेरा घोड़ा उधार ले जाओ और मेरी पड़ोसन के पास चली जाओ शायद वह तुम्हें उसके बारे में कुछ बता दे।

जब तुम वहॉ पहुॅच जाओ तो बस इसके बॉये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा।"

यह कह कर उसने उसको अपना घोड़ा दिया और सुनहरी कंघी दी कि शायद वह उसके कुछ काम आ जाये। लड़की ने उससे कंघी ली और उसके घोड़े पर बैठ कर और आगे चल दी।

वह फिर काफी देर तक चलती रही। वह बहुत थक गयी थी। अब वह फिर से एक पहाड़ी के नीचे आ पहुॅची थी। वहॉ एक तीसरी जादूगरनी बैठी हुई थी। उसके पास एक सोने का चरखा रखा हुआ था।

उसने उससे भी वही पूछा कि क्या वह उस राजकुमार का पता जानती थी जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

वह जादूगरनी बोली — "ऐसा लगता है कि उसकी शादी तुमसे ही होनी है।"

"जी हॉ। मैं ही हूँ वह।"

पर इसको भी इससे पहले वाली दोनों जादूगरनियों से ज़्यादा कुछ नहीं मालूम था। वह भी केवल इतना ही जानती थी कि वह एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था।

"और वहॉ तुम पहुँचोगी। देर से या फिर कभी नहीं। पर हॉ मैं तुमको अपना घोड़ा उधार दे सकती हूँ उस पर चढ़ कर तुम पूर्वी हवा के पास चली जाओ। शायद वह उस हिस्से को जानता हो और तुमको उड़ा कर वहॉ ले जाये।

पर जब तुम वहॉ पहुँच जाओ तो बस इसके बॉये कान के नीचे एक चाबुक मार देना और यह अपने आप ही वापस घर लौट आयेगा।"

कह कर उसने भी उसको अपना सुनहरा चरखा दिया कि शायद वव्ह उसके कभी काम आ जाये।

वह फिर उस घोड़े पर चढ़ कर बहुत दिनों तक चलती रही। पर पूर्वी हवा के घर तक आते आते वह बहुत थक गयी थी। उसके घर पहुँचने पर उसने उससे भी वही पूछा।

क्या वह उस राजकुमार का पता जानता था जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और

चॉद के पश्चिम में था। और जिसकी शादी एक ऐसी राजकुमारी से होने वाली थी जिसकी नाक तीन ऐल लम्बी थी।

पूर्वी हवा बोला — "हॉ मैं उसे जानता तो हूँ क्योंकि मैं उसके बारे में अक्सर बात करता रहता हूँ पर मैं उसके महल का रास्ता नहीं जानता क्योंकि मैं उतनी दूर कभी गया नहीं।

पर अगर तुम मेरे साथ चलो तो मैं तुम्हें अपने भाई पश्चिमी हवा के पास ले चलता हूँ। हो सकता है कि वह जानता हो। बस तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उसके पास ले चलता हूँ।"

सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों बहुत जल्दी ही पश्चिमी हवा के घर पहुँच गये।

वहॉ जा कर पूर्वी हवा ने उससे कहा कि वह एक ऐसी लड़की को ले कर आया है जिसको उस राजकुमार से मिलना ही है जो अपनी सौतेली मॉ के साथ एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चॉद के पश्चिम में था। उसको बहुत खुशी होगी अगर उसको वह उसको उस महल तक का रास्ता बता देगा।"

पर पश्चिमी हवा ने भी वही कहा — "मैं उसका रास्ता नहीं जानता क्योंकि मैं उतनी दूर तक कभी नहीं बहा पर हॉ मैं तुम्हारे साथ अपने दूसरे भाई दक्षिणी हवा के पास जा सकता हूँ क्योंकि वह हम दोनों से कहीं ज़्यादा ताकतवर है। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ ओर मैं तुमको वहॉ ले चलूँगा।"

ऐसा कह कर उसने अपने पंख बहुत दूर तक फैला दिये। वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वह पश्चिमी हवा उसको ले कर उड़ चला।

जब वे दक्षिणी हवा के घर पहुँचे तो पश्चिमी हवा ने उससे पूछा कि क्या वह उस राजकुमार के महल का रास्ता जानता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था क्योंकि उस लड़की को वहाँ पहुँचना ही है।"

दक्षिणी हवा बोला — "तुमको बताने की जरूरत नहीं है। यह वही है।

मैं अपने समय में बहुत जगह गया हूँ पर इतनी दूर मैं कभी नहीं गया। पर अगर तुम चाहो तो मैं तुमको अपने भाई उत्तरी हवा के पास ले चलता हूँ। वह हम सबमें सबसे बड़ा है और हम सबमें सबसे ज़्यादा ताकतवर भी है।

अगर उसको उस महल का रास्ता नहीं मालूम है तो फिर दुनियाँ में उस महल का रास्ता तुम्हें दुनियाँ में कोई नहीं बता सकता। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं तुम्हें उसके घर ले चलता हूँ।"

सो वह लड़की उसकी पीठ पर बैठ गयी और वे दोनों बहुत जल्दी ही उसके घर पहुँच गये। जब वे उत्तरी हवा के घर पहुँचे तो वह तो बहुत तेज़ी से इधर उधर बह रहा था। उसकी ठंडक बहुत दूर से ही आ रही थी।

वह उनको देखते ही दूर से चिल्लाया — "चले जाओ यहाँ से। तुम लोग यहाँ क्यों आये हो।" इससे वे लोग उसकी बरफीली ठंड से काँप गये।

दक्षिणी हवा बोला — "तुमको इतना बुरा बुरा नहीं बोलना चाहिये क्योंकि मैं तुम्हारा भाई दक्षिणी हवा यहाँ हूँ। और यह लड़की है जिसको वह राजकुमार चाहिये ही चाहिये जो एक ऐसे महल में रहता था जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

अब बस यह तुमसे यह जानना चाहती है कि क्या तुम कभी उसके घर गये हो और क्या तुम उसके घर का रास्ता जानते हो। वह उसको पा कर बहुत खुश होगी।"

"ओह वह तो मुझे मालूम है कि वह कहाँ है। एक बार मैंने अपनी ज़िन्दगी में एक ऐस्पैन का पत्ता उधर उड़ाया था पर मैं इतना थका हुआ था कि उसको उड़ाने के बाद मैं फिर कई दिनों तक बह ही नहीं सका।

पर अगर तुम वाकई उधर जाना चाहते हो और मेरे साथ आने में डरते नहीं हो तो मेरी पीठ पर बैठ जाओ और मैं देखता हूँ कि मैं तुमको उधर तक ले जा सकता हूँ या नहीं।"

दक्षिणी हवा बोला — "अगर किसी तरह भी मुमकिन है तो इसको उधर जाना ही चाहिये और जहॉ तक डरने का सवाल है तुम कितनी भी तेज़ जाओ वह डरेगी नहीं।"

उत्तरी हवा बोला — "तब ठीक है। पर तुमको आज की रात यहॉ सोना पड़ेगा क्योंकि अगर हम वहॉ जायेंगे तो हमको वहॉ सारा दिन लग जायेगा।"

अगली सुबह सवेरे ही उत्तरी हवा ने लड़की को जगाया अपने अन्दर हवा भरी, अपने आपको ताकतवर बनाया कि वह भयानक सा लगने लगा। लड़की उसके ऊपर बैठ गयी और वे दोनों हवा में उड़ कर ऊपर उठ गये।

उनके उड़ने के ढंग से ऐसा लग रहा था जैसे कि वे जब तक अपनी जगह पहुॅच नहीं जायेंगे रुकेंगे नहीं। उनके उड़ने से उनके नीचे बड़ा भारी तूफान आया हुआ था कि उससे बहुत सारी लकड़ियॉ और मकान टूट गये थे। जब वे समुद्र के ऊपर से उड़े तो सैंकड़ों जहाज़ समुद्र में डूब गये।

इस तरह से वे अपने नीचे की सब जगहों को बरबाद करते हुए चले जा रहे थे। किसी को यकीन ही नहीं था कि वे इतनी दूर जा रहे थे। बहुत देर तक तो वे समुद्र के ऊपर ही उड़ते रहे।

उत्तरी हवा को इतनी थकान होती जा रही थी कि वह अब मुश्किल से बेचारा मुॅह से हवा फेंक पा रहा था और मुश्किल से ही अपने पंख चला पा रहा था।

आखिर वह नीचे गिरने लगा और समुद्र की ऊँची ऊँची लहरें उसके पैर छूने लगीं।

उत्तरी हवा ने लड़की से पूछा — "क्या तुम्हें डर लग रहा है?"

लड़की बोली — "नहीं मुझे बिल्कुल भी डर नहीं लग रहा।"

पर अब वे उस जगह से बहुत दूर नहीं थे जहाँ उनको जाना था और उत्तरी हवा में अभी इतनी ताकत तो थी ही कि वह उस लड़की को समुद्र के किनारे बने हुए उस महल की खिड़की के नीचे फेंक सकता जो सूरज के पूर्व में था और चाँद के पश्चिम में था।

पर उसके बाद तो वह इतना थक गया था कि घर लौटने से पहले उसको वहाँ कई दिन तक आराम करना पड़ा।

अगले दिन वह लड़की उस महल की एक खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपने सुनहरी सेब से खेलने लगी। सबसे पहला आदमी जो उसने देखा वह थी वह लम्बी नाक वाली राजकुमारी जिसकी राजकुमार से शादी होने वाली थी।

उस राजकुमारी ने खिड़की खोली और उससे पूछा — "ओ लड़की तुम क्या लोगी इस सेब का?"

लड़की बोली — "मैम यह बेचने के लिये नहीं है, न तो पैसों के लिये और न सोने के लिये।"

राजकुमारी बोली — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — "अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरा सेब ले लिया और जब वह लड़की राजकुमार के सोने के कमरे तक आयी तब तक तो राजकुमार गहरी नींद सो चुका था।

उसने उसको हिलाया, जगाया, इस बीच वह रोती भी रही पर वह जो कुछ कर सकती थी करती रही पर वह उसको जगा नहीं सकी। इतने में सुबह हो गयी तो लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको राजकुमार के कमरे से बाहर निकाल दिया।

अगले दिन वह लड़की फिर से उसी खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपनी सुनहरी कंघी से कंघी करती रही तो फिर वही हुआ जो पहले दिन हुआ था।

लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको उस सुनहरी कंघी से कंघी करते देखा तो उससे पूछा कि वह वह कंघी उसको कितने की देगी।

उसने भी उसको पहले वाला जवाब दिया — "यह कंघी बेचने के लिये नहीं है। न तो सोने के लिये ओर न पैसे के लिये।"

लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उससे फिर पूछा — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — "अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरी कंघी ले ली और उसको रात को आने के लिये कहा। पर जब तक वह लड़की राजकुमार के सोने के कमरे तक आयी तब तक तो राजकुमार पिछले दिन की तरह से गहरी नींद सो चुका था।

उसने उसको हिलाया, जगाया, इस बीच वह रोती भी रही पर वह जो कुछ कर सकती थी करती रही पर वह उसको जगा नहीं सकी। इतने में सुबह हो गयी। सुबह की पौ फटते ही लम्बी नाक वाली राजकुमारी ने उसको राजकुमार के कमरे से बाहर निकाल दिया।

अगले दिन वह लड़की फिर से उसी खिड़की के नीचे बैठ गयी और अपने सोने के चरखे से रुई कातने लगी। लम्बी नाक वाली राजकुमारी को वह सोने का चरखा बहुत पसन्द आया तो उसने उस लड़की से फिर वही पूछा — "ओ लड़की तुम क्या लोगी इस चरखे को बेचने का?"

लड़की बोली — "मैम यह बेचने के लिये नहीं है। न तो पैसों के लिये और न सोने के लिये।"

राजकुमारी बोली — "अगर यह पैसों या सोने के लिये बेचने के लिये नहीं है तो फिर तुम इसके लिये क्या लोगी? तुम इसके लिये अपनी कीमत तो बताओ।"

लड़की ने जवाब दिया — "अगर मैं उस राजकुमार के पास पहुँच जाऊँ जो यहाँ रहता है और उसके साथ सारी रात गुजार लूँ तब आप इसको ले सकती हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि यह तो मुमकिन है। सो उसने उससे वह सुनहरा चरखा ले लिया और उस लड़की को रात को आने के लिये कहा।

इस बीच कुछ ईसाई लोग जो वहाँ बन्दी थे इधर से उधर ले जाये जाते थे। उनको ले जा कर राजकुमार के कमरे के बराबर वाले कमरे में बिठा दिया जाता था।

सो जब वे वहाँ बैठे हुए थे उनको लगा कि कोई लड़की उनके बराबर वाले कमरे में थी। वह रो रही थी और भगवान से प्रार्थना कर रही थी। और यह वह दो दिन से कर रही थी। उन्होंने यह बात राजकुमार से कही।

पर राजकुमार ने उनसे कहा कि उसको तो कुछ सुनायी ही नहीं दिया। वह तो रात भर गहरी नींद सोता रहा।

सो उस शाम जब वह लम्बी नाक वाली राजकुमारी राजकुमार को सुलाने वाला पेय ले कर आयी और उसे राजकुमार को पीने के लिये दिया तो राजकुमार ने उसे पीने का बहाना तो किया पर पिया

नहीं। वह पेय उसने अपने पीछे की तरफ फेंक दिया क्योंकि उसको लगा कि वह पेय उसको सुला देता था।

सो इस बार जब वह लड़की उसके कमरे में आयी तब वह जागा हुआ था। उस लड़की ने आ कर उसको अपनी सारी कहानी बतायी कि वह कैसे कैसे वहॉ तक पहुॅची।

राजकुमार बोला — "ओह तो तुम तो बहुत ठीक समय से आ गयीं क्योंकि कल ही हमारी शादी होने वाली है। और क्योंकि अब तुम आ गयी हो इसलिये मुझे अब इस लम्बी नाक वाली राजकुमारी से शादी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

तुम्हीं एक ऐसी लड़की थीं जो मुझे इस शाप से आजाद करा सकती थीं। अब मैं यह कह सकता हूॅ कि यही मेरी पत्नी होने के लायक है।

कल मैं उससे कहूॅगा कि वह मेरी कमीज पर लगे टैलो के तीन धब्बे साफ कर दे। वह कहेगी कि "हॉ मैं करूॅगी।" क्योंकि उसको पता ही नहीं कि वे धब्बे तुमने वहॉ डाले हैं। पर यह काम तो ईसाई लोगों के लिये है न कि ट्रौल लोगों के लिये।

इसलिये मैं कहूॅगा कि मैं किसी और लड़की से शादी ही नहीं करूॅगा सिवाय उस लड़की के जो मेरी कमीज के वे धब्बे साफ कर दे और फिर मैं तुमसे उन्हें साफ करने के लिये कहूॅगा।"

उसके बाद दोनों ने वह रात खुशी खुशी बितायी। अगले दिन जब शादी होने वाली थी राजकुमार बोला — "पहले मैं यह देखना चाहूँगा कि मेरी दुलहिन मेरे लिये ठीक भी है या नहीं।"

उसकी सौतेली माँ तुरन्त बोली — "हाँ यह तो ठीक है।"

तब राजकुमार बोला — "मेरे पास एक बहुत ही बढ़िया कमीज है जिसे मैं अपनी शादी पर पहनना चाहूँगा। पर किसी तरह से उस पर टैलो के तीन धब्बे लग गये है।उसे पहनने से पहले उनको साफ करना जरूरी है।

मैंने यह कसम ले ली है कि मैं केवल उसी लड़की से शादी करूँगा जो उस कमीज से वे धब्बे साफ करेगी। अगर वह यह काम नहीं कर सकती तो वह मेरी दुलहिन बनने के लायक नहीं है।"

अब यह तो उसने कोई बड़ी बात नहीं कही थी सो वे सब इस बात पर राजी हो गये। लम्बी नाक वाली राजकुमारी वह कमीज ले गयी और उसके धब्बे साफ करने लगी।

जैसे जैसे वह उनको मल मल कर साफ करने लगी तो वे धब्बे तो बजाय साफ होने के और बड़े होते गये। यह देख कर उसकी माँ बूढ़ी जादूगरनी बोली — "अरे तुझसे यह नहीं होने का। तू इसे मुझे दे मैं करती हूँ।"

पर उसके हाथ में जाते ही वह कमीज तो और ज़्यादा खराब हो गयी। जितना वह उन धब्बों को मलती और उस कमीज को धो कर

निचोड़ती तो वे तो और बड़े और काले होते जाते। इससे वह कमीज और भद्दी हो गयी।

इसके बाद वहॉ मौजूद सब ट्रौल ने उसको साफ करने की कोशिश की पर जितनी उसको साफ करने में देर होती गयी वह कमीज और काली और भद्दी होती गयी। उसके बाद तो वह चिमनी जैसी हो गयी।

यह देख कर राजकुमार बोला — "तुम लोग तो किसी काम के नहीं। तुम एक कमीज नहीं धो सकते। जबकि इस महल के बाहर एक भिखारिन बैठती है मैं शर्त लगाता हूॅ कि वह मेरी यह कमीज जरूर ही तुम लोगों से ज़्यादा साफ कर देगी।"

वह चिल्लाया — "ओ लड़की अन्दर आओ।"

वह लड़की अन्दर आयी तो राजकुमार ने उसको वह कमीज दिखा कर पूछा — "ओ लड़की क्या तुम यह कमीज साफ कर सकती हो?"

"पता नहीं। पर शायद मैं कर सकती हूॅ।"

और जैसे ही उसने राजकुमार के हाथों से उसकी कमीज ले कर पानी में डुबोई तो वह तो बरफ की तरह से सफेद हो गयी।

"हॉ तुम्हीं मेरे लिये ठीक दुलहिन हो।"

यह देख कर वह बूढ़ी जादूगरनी गुस्से में भर कर उठी और वहॉ से पैर पटकती हुई चली गयी। उसके पीछे पीछे उसकी बेटी

लम्बी नाक वाली राजकुमारी और दूसरे ट्रौल भी सब वहॉ से चले गये।

कम से कम हमने फिर कभी उनके बारे में नहीं सुना।

राजकुमार और उस लड़की ने उन सब ईसाई लोगों को आजाद कर दिया जो उस राजकुमार के सोने वाले कमरे के बराबर वाले कमरे में बन्द कर दिये गये थे।

वे जब वहॉ से गये तो अपने साथ सोना और चॉदी भी लेते गये और फिर उस महल से जो सूरज के पूर्व में और चॉद के पश्चिम में था बहुत दूर चले गये।

7 आसमान की बेटी[28]

यह अबसे बहुत पुरानी बात है कि एक जगह एक किसान रहता था। उसके कई बेटियॉ थीं बहुत सारी भेड़ें और जानवर थे। एक बार वह उनको देखने गया तो उसको कोई नहीं मिला। वह सारा दिन उनको ढूँढता रहा।

शाम को जब वह घर लौट रहा था तो उसने एक छोटा सा कुत्ता देखा जो एक बागीचे में घूम रहा था। उसको देख कर वह कुत्ता उसके पास आया और उससे पूछा — "अगर मैं तुम्हें बहुत सारी भेड़ें और जानवर दे दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?"

किसान बोला — "मुझे नहीं पता कि तुझे मुझसे क्या चाहिये ओ बदसूरत जानवर। पर मेरे पास जो कुछ भी है मैं उसमें से तुझे कुछ भी दे दूँगा।"

कुत्ते ने पूछा — "क्या तुम मुझे अपनी बड़ी बेटी से शादी करने दोगे?"

किसान बोला — "अगर वह तुझसे शादी करने के लिये राजी होगी तो मैं उसे तुझे दे दूँगा।"

---

[28] The Daughter of the Skies – a folktale from Scotland, Europe. Taken from the Web Site : http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/daughterskies.html
Taken from the book: "Popular Tales From the West Highlands: orally collected", by JF Campbell. London: Alexander Gardner. 1890-1893. Reprint available at Detroit: Singing Tree Press, 1969.
[My Note: This story is written in old English and very very incoherent in its description. It was very difficult to translate it. Sometimes some expressions had to be added to keep its coherency intact, but still many incidents unless written cannot be even guessed. I apologize for that.]

सो कुत्ता और किसान किसान के घर चल दिये।

किसान ने घर पहुँच कर अपनी सबसे बड़ी बेटी से पूछा कि क्या वह उस कुत्ते से शादी करना पसन्द करेगी। उसने कहा कि वह उससे शादी करना पसन्द नहीं करेगी।

उसने अपनी दूसरी बेटी से पूछा क्या वह उस कुत्ते से शादी करना पसन्द करेगी। उसने कहा कि वह भी उससे शादी करना पसन्द नहीं करेगी।

तब उसने अपनी सबसे छोटी बेटी से पूछा क्या वह उस कुत्ते से शादी करना पसन्द करेगी तो उसने कहा कि हॉ वह उससे शादी कर लेगी। सो उन दोनों की शादी हो गयी। उसकी दोनों बहिनों ने उसका खूब मजाक बनाया कि उसने एक कुत्ते से शादी कर ली।

कुत्ता उसको अपने घर ले गया। जब वह अपने रहने की जगह आया तो वह बढ़ कर एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गया। वे लोग काफी दिनों तक साथ साथ खुशी खुशी रहे।

फिर एक दिन लड़की की अपने माता पिता से मिलने की इच्छा हुई तो उसने यह बात अपने पति से कही तो वह बोला कि उसको वहॉ बच्चा पैदा होने तक नहीं रहना चाहिये क्योंकि उसे बच्चे की आशा हो गयी थी। उसने कहा कि वह वहॉ तब तक नहीं ठहरेगी।

उसके पति ने उसको एक घोड़ा दिया और उससे कहा कि जैसे ही वह घर पहुँच जाये तो वह उसके सिर से उसका साज उतार ले और उसको वापस आने दे। और जब वह वहॉ से वापस आना चाहे

तो बस वह उस घोड़े के सिर पर पहनने वाले साज को हिला दे तो घोड़ा उसके पास आ जायेगा और वह उसको उसके सिर पर फिर से पहना दे। उसने वही किया जो उसके पति ने उससे करने के लिये कहा था।

पिता के घर पहुँचने के कुछ दिन बाद ही वह बीमार पड़ गयी और उसने एक बच्चे को जन्म दिया। उस रात कई आदमी उसकी देखभाल के लिये वहीं खड़े रहे। उस रात वहाँ बहुत ही मीठा संगीत बजा जैसा कि पहले कभी किसी ने न सुना होगा। उसको सुन कर सारा शहर सो गया सिवाय लड़की के।

उसका पति वहाँ आया और उस बच्चे को अपने साथ ले गया। उसके बाद संगीत रुक गया और सब जाग गये। किसी को भी यह पता नहीं चला कि वह बच्चा किधर गया।

लड़की ने भी किसी को कुछ नहीं बताया पर जैसे ही वह उठी उसने घोड़े का सिर का साज हिलाया तो उसका घोड़ा उसके पास आ गया। उसने उसे घोड़े को पहनाया तो घोड़ा उसको ले कर घर चल दिया। मार्च की तेज़ हवा जो आगे बह रही थी उसको तो वह पकड़ लेता था पर मार्च की वह तेज़ हवा जो उसके पीछे बह रही थी वह उसको नहीं पकड़ पा रही थी।

जब वह घर पहुँची तो वह बोला "तू आ गयी।"

वह बोली "हाँ में आ गयी।"

पति ने भी उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और लड़की ने भी उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। करीब नौ महीने बाद लड़की ने फिर कहा कि वह अपने पिता के घर जाना चाहती है। तो उसने उसको जाने दिया।

पहले की तरह से उसने उसे घोड़ा दिया और कहा कि घर पहुँच जाये तब वह उसके सिर का साज उतार ले औ उसको घर आने दे। और जब वहाँ से आना चाहे तो उस साज को हिला दे तो घोड़ा उसके पास पहुँच जायेगा और उसको वहाँ से ले आयेगा।

सो वह घोड़े पर चढ़ कर अपने घर चली गयी और वहाँ पहुँच कर उसने उसके सिर का साज उतार कर उसको छोड़ दिया।

उसी रात उसको एक बच्चा हुआ। उसका पति फिर उसके पास पहले की तरह से आया और बच्चे को अपने साथ ले गया। जब संगीत शुरू हुआ तो सब सो गये सिवाय लड़की के और जब संगीत बन्द हुआ तो सब जाग गये।

उसका पिता उसके सामने खड़ा था उसने उससे बहुत पूछा कि वह उसको यह बताये कि यह सब क्या था पर उस लड़की ने कुछ बता कर नहीं दिया। जब वह कुछ ठीक हो गयी और उठी तो फिर उसने घोड़े के सिर का साज हिलाया तो घोड़ा फिर से उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसने उसके सिर पर साज पहनाया और अपने घर की तरफ चल दी।

जब वह घर पहुँची तो उसने पूछा "तू आ गयी।"

उसने जवाब दिया "हॉ मैं आ गयी।

न तो पति ने उसकी तरफ कोई ध्यान दिया और न पत्नी ने ही उसकी तरफ कोई ध्यान दिया। नौ महीने बाद उसने फिर कहा कि मैं अपने पिता के घर जाना चाहती हूॅ।

तो वह बोला — "जाओ मगर इस बार तुम वैसा नहीं करना जैसा कि तुम पहले दो बार कर चुकी हो।"

उसने कहा "नहीं करूॅगी।" पति ने उसे घोड़ा दे दिया और वह वहॉ से चली गयी। वह अपने पिता के घर पहुॅची कि उसी रात उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

जैसे पहले दो बार हो चुका था इस बार भी वही हुआ। संगीत बजा सब सो गये सिवाय लड़की के। पति ने बच्चे को उठाया और ले कर चला गया। संगीत बजना बन्द हो गया और फिर सब जाग गये।

इस बार भी उसका पिता उसके पास था। वह तो लड़की को मारने को तैयार हो गया कि अगर उसने उसको यह नहीं बताया कि उसके बच्चों के साथ क्या हो रहा है और उसका पति किस किस्म का आदमी था तो वह उसको वहीं मार देगा।

जब उसके पिता ने उसे बहुत डराया धमकाया तो उसने उसको बता दिया।[29]

[29] Example of incoherency – here it is not written that what did she tell to her father about her husband. One cannot know this even up to the end of the story.

जब वह थोड़ी ठीक हो गयी तो वह घोड़े के सिर का साज ले कर पास की एक पहाड़ी पर गयी और उस साज को हिलाना शुरू किया कि उसके हिलाने से शायद वह घोड़ा उसके पास आ जाये और वह साज वह उसके सिर में डाल सके। हालॉकि वह काफी देर तक उसको हिलाती रही पर घोड़ा वहॉ नहीं आया।

जब उसने देखा कि घोड़ा नहीं आ रहा है तो वह पैदल ही चल दी। जब वह घर पहुँची तो वहॉ कोई नहीं था। बस एक बुढ़िया थी जो उसकी सास थी। उसने उसे इस तरह अकेले आते देखा तो बोली "अरे तू अकेली बिना घोड़े के? पर अगर तू जल्दी चलती होती तो तू उसको पकड़ सकती थी।"

सो वह वहॉ से चल दी। रात होने को आ रही थी। उसने अपने से बहुत दूर पर एक रोशनी जलती देखी। और अगर वह रोशनी उससे काफी दूर पर थी तो भी वह वहॉ जल्दी ही पहुँच सकती थी।

जब वह उस मकान के अन्दर गयी तो उसके फर्श सब साफ थे चमक रहे थे और उस घर की मालकिन दूर बैठी चरखा चला रही थी। घर की मालकिन ने कहा "आजा। मुझे तेरी खुशी और तेरी यात्रा के बारे में पता है। तू अपने पति को पकड़ने की कोशिश कर सकती है। वह आसमान की बेटी से शादी कर रहा है।"

लड़की बोली "अच्छा।"

घर की मालकिन उठी और उसको मॉस ला कर दिया। उसके पैर धोने के लिये पानी ला कर दिया और उसको सुला दिया। सुबह उठ कर उसने उसको एक कैंची दी जो अपने आप ही काटती थी। फिर उसने उससे कहा — "तू आज की रात मेरी बीच वाली बहिन के घर में रहेगी।"

वह फिर वहॉ से चल दी और चलती रही जब तक कि रात नहीं हो गयी। उसने फिर बहुत दूर एक रोशनी जलती देखी। वह वहॉ भी जल्दी ही पहुँच गयी।

जब वह उस घर में पहुँची तो उस घर के फर्श भी साफ सुथरे थे। बीच में आग जल रही थी और उस आग के पास बैठी हुई घर की मालकिन चरखा चला रही थी।

घर की मालकिन ने उसका स्वागत किया "आजा मुझे तेरी खुशी और यात्रा का पता है।" उसने उसको लिये मॉस बनाया। पानी ला कर उसके पैर धोये और खिला पिला कर उसे लिटा दिया।

जैसे ही अगले दिन दिन निकला उसने उससे पैदल जाने के लिये कहा। जाते समय उसने उसको एक सुई दी जो अपने आप ही सिलती थी और कहा कि आज की रात तू मेरी सबसे छोटी बहिन के घर में ठहरेगी।

वह फिर चलती गयी चलती गयी जब तक अँधेरा नहीं हो गया। उसको फिर से बहुत दूर एक रोशनी जलती हुई दिखायी दी। वह उसके पास जल्दी ही पहुँच गयी।

उस घर का फर्श भी साफ सुथरा था बीच में आग जल रही थी और उस घर की मालकिन उसके पास बैठी चरखा चला रही थी। वह बोली — "आजा अन्दर आ जा। मुझे तेरी खुशी और यात्रा का पता है।"

उसने भी उसके लिये मॉस बनाया पैर धोने के लिये पानी दिया और खिला पिला कर उसे सुला दिया। सुबह दिन निकलने से भी पहले वह उठी और उसको पैदल जाने दिया। उसने उसके लिये मॉस बनाया और एक धागा दिया जो अपने आप ही सुई में चला जाता था।

जैसे जैसे कैंची काटती जाती थी सुई उसको सिलती जाती थी तो यह धागा उन दोनों का साथ देता था। उसने यह भी कहा कि आज की रात वह शहर पहुँच जायेगी।

सो शाम को वह शहर पहुँच गयी। उस रात वह अपनी थकान मिटाने के लिये राजा के घर की देखभाल करने वाली के घर पहुँची। वह वहॉ आग के पास जा कर उसकी गरमी लेने के लिये बैठ गयी।

उसने उस बुढ़िया से उसे कुछ काम देने के लिये कहा ताकि वह वहॉ खाली न बैठी रहे। बुढ़िया ने कहा — "आज तो यहॉ कोई भी काम नहीं कर रहा क्योंकि राजा की बेटी की शादी है।"

लड़की बोली — "कोई बात नहीं। मुझे सिलने के लिये कोई कपड़ा ही दे दो या फिर कोई कमीज। वह करने से कम से कम मेरे हाथ तो चलते रहेंगे।" उसने उसको अपनी कमीजें बनाने के लिये दे दीं।

लड़की ने अपनी जेब से कैंची निकाली और उससे काम करना शुरू कर दिया। उसके बाद उसने अपनी सुई को काम पर लगा दिया। जैसे जैसे कैंची काटती जाती सुई उन कपड़ों को सिलती जाती। सुई में धागा अपने आप ही पड़ता जाता।

इतने में राजा की एक नौकरानी वहॉ आयी। उसने उस लड़की को देखा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि किस तरह से कैंची और सुई अपना अपना काम अपने आप ही करती जा रही थीं।

वह तुरन्त ही वहॉ भागी भागी गयी और जा कर राजकुमारी से बोली कि उनके घर की देखभाल करने वाली के घर में एक लड़की बैठी है जिसके पास एक कैंची है और एक सुई है जो अपना अपना काम अपने आप ही कर रही हैं।

यह सुनते ही राजकुमारी ने कहा "अगर ऐसा है तो तुम कल सुबह ही उसके पास जाना और उससे पूछना कि वह वह कैंची कितने में बेचेगी।"

सो सुबह होते ही वह नौकरानी उस लड़की के पास आयी। उसने लड़की से पूछा कि वह कैंची की क्या कीमत लेगी। लड़की ने बोली "मैंने कुछ नहीं माँगा सिवाय इसके कि मैं वहीं लेटना चाहती हूँ जहाँ राजकुमारी जी कल रात लेटी थीं।"

नौकरानी ने जब आ कर राजकुमारी को यह बताया तो राजकुमारी ने अपनी नौकरानी से कहा — "ठीक है। तुम जा सकती हो। उससे कह देना कि उसको वह मिल जायेगा।"

सो उसने वह कैंची राजकुमारी को दे दी। जब वे लोग सोने गये तो राजकुमारी ने उसके पीने में कोई नींद की दवा मिला दी जिससे कि वह रात भर जाग ही न सके।

वह रात भर सोता रहा और जैसे ही दिन निकला राजकुमारी वहाँ आयी जहाँ वह सो रही थी और उसको उठा कर बाहर कर दिया। अगले दिन वह सुई से काम कर रही थी और दूसरी कैंचियों से काट रही थी।

राजकुमारी ने फिर अपनी नौकरानी से उसके पास जाने के लिये और उससे पूछने के लिये कहा कि वह सुई उसको कितने पैसे में बेचेगी। नौकरानी ने उससे पूछ कर बताया कि वह उसकी कोई

कीमत नहीं मॉग रही सिवाय इसके कि वह फिर से उसी कमरे में सोना चाहती है।

राजकुमारी बोली — "उससे जा कर कह दो कि उसकी मॉग पूरी की जायेगी।"

और इस तरह से राजकुमारी ने उस लड़की से उसकी सुई भी ले ली। जब वे सोने जा रहे थे तो राजकुमारी ने फिर से उसके पीने में कोई सोने की दवा मिला दी जिससे वह सारी रात सोता रहा।

इत्तफाक से उसका सबसे बड़ा बेटा वहीं उनके पास एक दूसरे पलंग पर सो रहा था। वह सारी रात उस लड़की को उससे बातें करते सुनता रहा। वह उससे कह रही थी कि वह उन तीनों बच्चों की मॉ है।

सुबह को फिर राजकुमारी ने उसको बाहर निकाल कर उसके घर भेज दिया। इधर सुबह को ही वह आदमी अपने बेटे के साथ सैर कर रहा था तो उसने अपने पिता को बताया कि वह रात भर क्या क्या सुनता रहा।

तीसरे दिन राजकुमारी ने फिर अपनी नौकरानी को उस लड़की के पास यह पूछने के लिये भेजा कि वह धागे की क्या कीमत लेगी। तो उसने फिर वही जवाब दिया — "कुछ नहीं सिवाय इसके कि आखिरी बार वह उसके कमरे में सोना चाहती है।"

राजकुमारी ने फिर उससे कह दिया कि वह ऐसा कर सकती है तो उसने उससे धागा भी ले लिया। उस रात को भी राजकुमारी ने

उसके पीने में सोने की दवा मिला दी थी पर उस आदमी ने उसे बिल्कुल नहीं पिया और फेंक दिया।

रात को उस लड़की ने कहा कि वह उसके तीनों बेटों का पिता था। तो उसने जवाब दिया कि हॉ वह उन तीनों बच्चों का पिता है।

सुबह को जब राजकुमारी उस लड़की को बाहर निकालने के लिये आयी तो उस आदमी ने उससे वहॉ से जाने के लिये कहा कि वह वहॉ से चली जाये क्योंकि जो उसके साथ है वह उसकी पत्नी है। फिर वे लोग वहॉ से अपने घर वापस आ गये। उस आदमी के ऊपर का जादू टूट गया और वे हमें छोड़ कर चले गये। हमने भी उनको छोड़ दिया।

8 लोहे का चूल्हा[30]

कमरे में सोने वाली जैसी यह कहानी यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश के कहानियों से ली गयी है।

यह उन दिनों की बात है जब इच्छाऐं सचमुच में कुछ मतलब रखती थीं। एक राजा के बेटे के ऊपर किसी जादूगरनी ने जादू कर दिया और उसे एक लोहे के चूल्हे में बन्द करके जंगल में रख दिया। वह वहॉ कई साल तक रहा। कोई उसे वहॉ से छुड़ा नहीं सका।

तब एक दिन एक राजा की बेटी उस जंगल में आयी और रास्ता भूल गयी सो वह लौट कर फिर अपने पिता के राज्य नहीं जा सकी। वह उस जंगल में नौ दिन तक इधर से उधर घूमती रही। आखिर वह उस लोहे के चूल्हे के पास आ पहुॅची।

उसने उस चूल्हे में से आवाज सुनी — "तुम कहॉ से आयी हो और किधर जा रही हो?"

राजकुमारी बोली — "मैं अपने पिता के राज्य का रास्ता भूल गयी हूॅ और अब वहॉ वापस लौट कर नहीं जा सकती।"

तब लोहे के चूल्हे में से उसने फिर सुना — "मैं तुम्हारी तुम्हारे घर पहुॅचने में सहायता कर सकता हूॅ और वह भी बहुत जल्दी अगर

[30] The Iron Stove – a folktale from Germany, Europe. Taken from the Book "Household Tales", by Jacob and Wilhelm Grimm. London: George Bell. 1884. Taken from the Web Site: http://www.surlalunefairytales.com/eastsunwestmoon/stories/ironstov.html

तुम मुझसे वह करने का वायदा करो जो मैं तुमसे करवाना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे पिता से भी बड़े राजा का बेटा हूँ। मैं तुमसे शादी कर लूँगा।"

यह सुन कर वह डर गयी और सोचने लगी कि "मैं इस लोहे के चूल्हे का क्या करूँगी।" पर क्योंकि वह अपने घर जाने की जल्दी में थी इसलिये उसने उससे वायदा कर लिया कि वह जो कुछ भी कहेगा वह वही करेगी।

उसने कहा कि वह एक चाकू ले कर यहाँ लौटेगी और इस लोहे के चूल्हे में एक छेद करेगी। फिर उसने उसको एक साथी दिया जो बोलता नहीं था पर वह उसको दो घंटे के अन्दर अन्दर उसके घर पहुँचा आया।

जब बेटी घर आयी तो किले में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। राजा ने खुशी से उसको गले लगाया और चूमा पर वह काफी परेशान थी।

वह अपने पिता से बोली — "पिता जी मुझे यहाँ आने के लिये कितने दुख उठाने पड़े। मैं उस बड़े से जंगल से शायद कभी भी वापस नहीं आ सकती थी अगर मुझे वहाँ एक लोहे का चूल्हा नहीं मिलता।

इसलिये मुझे अपने वायदा तो निभाना पड़ेगा। मुझे वहाँ जा कर उसे आजाद करना पड़ेगा और फिर उससे शादी करनी पड़ेगी।"

यह सुन कर राजा तो बहुत डर गया और बेहोश होते होते बचा क्योंकि यह तो उसकी अकेली बेटी थी।

सो उन लोगों ने यह तय किया कि वह राजकुमारी की बजाय अपने आटा पीसने वाले की बेटी को वहाँ भेज देंगे। वह लड़की सुन्दर भी थी और समझदार भी थी।

सो उन्होंने उसको एक चाकू दिया और जंगल में भेज दिया। उसको बता दिया कि उसको उस लोहे के चूल्हे को खुरच खुरच कर उसमें एक छेद बनाना था। वह वहाँ उसको चौबीस घंटे तक खुरचती रही पर उसका एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं निकाल सकी।

जब सुबह हो गयी तो चूल्हे में से आवाज आयी — "मुझे ऐसा लगता ही कि बाहर दिन हो गया है।"

लड़की बोली — "मुझे भी ऐसा ही लगता है। मुझे अपने पिता के आटा पीसने की चक्की की आवाज आ रही है।"

"ओह तो तुम आटा पीसने वाले की बेटी हो। तुम तुरन्त ही यहाँ से चली जाओ और राजकुमारी को यहाँ भेज दो।"

वह तुरन्त ही वहाँ से चली गयी और राजा से जा कर कहा कि वह आदमी उसको नहीं चाहता था उसे तो राजा की बेटी ही चाहिये।

उनके पास एक सूअर चराने वाले की बेटी भी थी जो चक्की पीसने वाले की बेटी से भी ज़्यादा सुन्दर थी। उन्होंने उसको सोने

का एक सिक्का दिया और राजा की बेटी की जगह उसको जंगल भेज दिया।

वह जंगल ले जायी गयी। वह भी वहॉ उस लोहे के चूल्हे को चौबीस घंटों तक खुरचती रही पर वह भी उसका एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं खुरच सकी।

अगले दिन जब दिन निकला तो चूल्हे में से फिर आवाज आयी "लगता है कि बाहर दिन निकल आया।"

सूअर चराने वाले की बेटी बोली — "हॉ मुझे भी ऐसा ही लगता है। मैं अपने पिता को बाजा बजाते सुन सकती हूँ।"

"तो तुम एक सूअर चराने वाले की बेटी हो। तुरन्त वापस चली जाओ यहॉ से और राजा की बेटी से कहो कि वह यहॉ आये और जैसा हम लोगों के बीच तय हुआ है वैसा ही होना चाहिये। अगर वह यहॉ नहीं आती है तो उसका सारा राज्य नष्ट हो जायेगा और कोई पत्थर एक दूसरे पर खड़ा नहीं रहेगा।"

जब राजा की बेटी ने यह सुना तो उसने तो रोना शुरू कर दिया। पर अब उसके पास अपना वायदा पूरा करने के अलावा और कोई चारा नहीं था।

सो उसने अपने पिता से विदा ली एक चाकू लिया और जंगल में उस लोहे के चूल्हे के पास चल दी। वहॉ पहुँच कर उसने उस चूल्हे का लोहा खुरचना शुरू किया। जल्दी ही उसमें से लोहा

निकलना शुरू हो गया और दो घंटे में तो उसने उसमें एक छोटा सा छेद भी बना लिया।

छेद के बनते ही उसने उस लोहे के चूल्हे के अन्दर झॉका तो उसने उसमें एक नौजवान देखा बहुत ही सुन्दर और सोने और जवाहरातों के गहनों से दमकता हुआ।

अब उसने और जल्दी जल्दी उसके लोहे को खुरचना शुरू किया। कुछ ही देर में उसने उसमें इतना बड़ा छेद कर लिया कि वह नौजवान अब उसमें से बाहर निकल सकता था।

बाहर निकल कर उसने कहा "अब तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूॅ। तुम मेरी पत्नी हो जिसने मुझे इसमें से आजाद किया है।"

वह उसको अपने साथ अपने राज्य ले जाना चाहता था पर राजा की बेटी ने उससे प्रार्थना की कि वह उसको एक बार उसके राज्य अपने पिता से मिलने जाने दे। राजकुमार ने उसको जाने की इजाज़त दे दी पर उससे कहा कि वह अपने पिता से तीन शब्द से ज़्यादा कुछ नहीं कहेगी और फिर उसके पास वापस आ जायेगी।

सो वह अपने राज्य चली गयी पर वहॉ जा कर वह तीन शब्दों से ज़्यादा बोली तो उसी समय वह लोहे का चूल्हा गायब हो गया और शीशे के पहाड़ पर और छेदती हुई तलवारों के ऊपर चला गया पर राजा का बेटा उसमें से आजाद हो गया और अब वह उसमें बन्द नहीं रहा।

इसके बाद उसने अपने पिता को गुड बाई कहा और बहुत ज़्यादा तो नहीं पर कुछ पैसा अपने साथ लिया और जंगल लौट गयी। जंगल जा कर वह लोहे के चूल्हे को ढूँढने लगी पर वह तो उसको कहीं मिला ही नहीं।

नौ दिनों तक वह उसे ढूँढती रही। इस बीच उसको इतनी ज़्यादा भूख लग आयी कि उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे। वह भूख के मारे मरी जा रही थी।

जब शाम हुई तो वह एक पेड़ में जा कर बैठ गयी और सोचा कि वह वह रात वहीं गुजारेगी क्योंकि उसको जंगली जानवरों का भी डर था।

जब आधी रात होने को आयी तो उसने कुछ दूरी पर एक रोशनी चमकती हुई देखी तो वह बोली "ओह मैं वहाँ ज़्यादा सुरक्षित रहती।" सो वह पेड़ पर से नीचे उतरी और उस रोशनी की तरफ चल दी। सारे रास्ते वह भगवान की प्रार्थना करती गयी।

चलते चलते वह एक पुराने मकान के सामने आ पहुँची। उसके चारों तरफ बहुत सारी घास उगी हुई थी और उसके सामने लकड़ी का एक छोटा सा ढेर लगा हुआ था।

यह देख कर उसको लगा "अरे मैं कहाँ आ गयी।" और उस मकान की एक खिड़की में से उसके अन्दर झाँका तो उसको बड़े छोटे मेंढकों के सिवा और कुछ दिखायी नहीं दिया। हाँ उसको खाने

की एक मेज लगी हुई दिखायी दी जिस पर शराब और भुना हुआ मॉस रखा हुआ था। उस पर रखे प्लेट और गिलास चॉदी के थे।

हिम्मत कर के उसने उसका दरवाजा खटखटाया तो एक मोटा सा मेंढक चिल्लाया —

ओ हरी छोटी नौकरानी लॅगड़ी टॉग वाली ओ छोटे कुत्ते लॅगड़ी टॉग वाले
सब इधर उधर कूद जाओ और देखो कि टॉगों वाला कौन है

तभी एक छोटा सा मेंढक बाहर निकला और उसको अन्दर ले गया। जब वह अन्दर गयी तो सबने उसका स्वागत किया और उसको बैठने के लिये कहा।

उन्होंने उससे पूछा कि वह कहॉ से आयी है और किधर जा रही है। तो उसने उनको अपनी पूरी कहानी बतायी और बताया कि किस तरह से वह उसकी बात न मानने की वजह से कि उसको अपने पिता से केवल तीन शब्द कहने थे वह चूल्हा और राजकुमार दोनों गायब हो गये हैं।

और अब उसको उन्हें पहाड़ियों के ऊपर ढूँढना पड़ रहा है जब तक वे मिल नहीं जाते। यह सुन कर बड़ी मोटी वाली मेंढकी बोली —

ओ हरी छोटी नौकरानी लॅगड़ी टॉग वाली ओ छोटे कुत्ते लॅगड़ी टॉग वाले
सब इधर उधर कूद जाओ और मेरा बड़ा वाला डिब्बा ले कर आओ

तब एक छोटा वाला मेंढक गया और उसका बड़ा वाला डिब्बा ले कर आया। उन्होंने उसको खाने के लिये मॉस और कुछ पीने के लिये दिया और फिर सोने के लिये एक बहुत अच्छे बिस्तर पर ले गये जो उसको रेशम और मखमल का लग रहा था। भगवान का नाम ले कर वह उसमें लेट गयी और लेटते ही सो गयी।

जब सुबह हुई तो वह उठी तो उस बड़ी और बूढ़ी मेंढकी ने उस बक्से में से निकाल कर उसे तीन सुइयॉ दीं जो उसको अपने साथ ले जानी थीं क्योंकि उसे उनकी जरूरत पड़ती।

क्योंकि उसको शीशे का पहाड़ पार करना था और फिर तीन छेदती हुई तीन तलवारों और एक झील के ऊपर से जाना था। अगर उसने यह सब कर लिया तब वह अपने प्रेमी से फिर से मिल पायेगी।

तब उसने उसे तीन चीज़ें दीं। एक तो तीन बड़ी सुइयॉ दूसरा हल का पहिया और तीसरी तीन गिरियॉ।

ये तीनों चीज़ें ले कर वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ी और शीशे के पहाड़ के पास आयी जो बहुत ही फिसलना था सो पहले उसको अपने पैर के पीछे तीन सुइयॉ गाड़नी पड़ती थीं और फिर पैर के आगे। इस तरह से वह उस पहाड़ को पार कर सकी।

पहाड़ पार करने के बाद उसने उनको एक जगह गाड़ दिया जहॉ उसने एक निशान लगा दिया। उसके बाद वह तीन छेदती हुई तलवारों के पास आयी तो वह हल के पहिये के ऊपर बैठ गयी

और उनके ऊपर से हो कर लुढ़क गयी। उसके बाद वह एक बहुत बड़े और सुन्दर किले के पास आ पहुँची।

वह उस किले के अन्दर चली गयी और वहाँ रहने की जगह माँगी। उसने कहा कि वह एक गरीब लड़की थी और उसे वहाँ कोई काम चाहिये था।

उसको इस बात का पता था कि वह राजकुमार जिसे उसने जंगल में लोहे के चूल्हे से छुड़ाया था वह इसी किले में रहता था। उसको वहाँ बहुत ही कम पैसे की मजदूरी पर रख लिया गया।

पर राजा के बेटे ने पहले से ही एक और लड़की को अपनी नौकरानी रखा हुआ था और वह उससे शादी करना चाहता था। क्योंकि उसको यह लग रहा था कि वह पहली लड़की तो अभी तक कभी की मर गयी होगी।

शाम को जब उसका काम खत्म हो गया और उसने अपने कपड़े बदल लिये तो उसने अपनी जेब मेंढकों की दी हुई तीन गिरियाँ महसूस कीं। उनमें से एक को उसने अपने दाँतों से तोड़ा और उसकी गिरी खाने ही वाली थी कि उसने देखा कि उसमें गिरी तो थी ही नहीं बल्कि एक शाही पोशाक थी।

पर जब दुलहिन को उस सुन्दर पोशाक के बारे में पता चला तो उसने कहा कि ऐसी पोशाक किसी नौकरानी के लिये ठीक नहीं थी सो वह उसे उसे बेच दे। पर उसने उसे बेचने से मना कर दिया और

कहा कि अगर दुलहिन उसको एक चीज़ की इजाज़त दे दे तो वह उसे उसे बिना किसी कीमत के दे सकती है।

और वह चीज़ थी कि वह उसे अपने दुलहे के कमरे में एक रात सोने दे। दुलहिन ने उसको इस बात की इजाज़त दे दी क्योंकि वह पोशाक थी ही इतनी सुन्दर। और फिर वैसी पोशाक उसके पास कभी थी ही नहीं।

जब शाम हुई तो उसने अपने दुलहे से कहा "वह बेवकूफ लड़की आज मेरे कमरे में सोयेगी।"

राजकुमार बोला "अगर तुम चाहती हो तो मैं तैयार हूँ।"

शाम को वह शराब पीता था तो उस शाम दुलहिन ने उसकी शराब में नींद की दवा मिला दी। सो दुलहा और वह नौकरानी जब रात को सोने के लिये गये तो राजकुमार इतनी गहरी नींद सोया कि वह उसको किसी भी तरह नहीं जगा सकी।

वह रात भर रोती रही और कहती रही — "मैंने तुम्हें तब लोहे के चूल्हे में से आजाद किया जब तुम जंगल में पड़े हुए थे। मैं तुम्हें ढूँढने निकली। मैं शीशे के पहाड़ पर चढ़ी। तीन छेदने वाली तलवारें पार कीं। मैंने एक झील पार की तब कहीं जा कर तुम मुझे मिले। और अब तुम मेरी सुन नहीं रहे हो।"

कुछ नौकर उस कमरे के दरवाजे के पास बैठे थे सारी रात उन्होंने उसका यह रोना सुना। तो जब सुबह हुई तो उन्होंने यह सब

अपने मालिक से कहा। उसने कहा कि उसको तो इस सबका पता ही नहीं चला।

अगले दिन फिर शाम को अपना काम खत्म करने के बाद फिर जब वह तैयार हुई तो उसने अपनी दूसरी गिरी तोड़ी तो उसमें से भी एक पोशाक निकली जो उसकी पहले दिन की पोशाक से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी।

जब दुलहिन ने उसको देखा तो वह उसको भी खरीदना चाहती थी पर वह लड़की तो उसका कोई पैसा न ले बल्कि वही कहे कि अगर उसको दुलहे के कमरे में एक रात और सोने दिया जाये तो वह उसको बिना कोई कीमत लिये उसे दे देगी।

उस दिन भी दुलहिन ने दुलहे को शाम को उसकी शराब में नींद की दवा मिला कर पिला दी और वह कमरे में जाते ही सो गया। और इतनी गहरी नींद सोया कि उस लड़की की कोई बात उसे सुनायी ही नहीं पड़ी।

वह फिर रात भर रोती रही और कहती रही — "मैंने तुम्हें तब लोहे के चूल्हे में से आजाद किया जब तुम जंगल में पड़े हुए थे। मैं तुम्हें ढूँढने निकली। मैं शीशे के पहाड़ पर चढ़ी। तीन छेदने वाली तलवारें पार कीं। मैंने एक झील पार की तब कहीं जा कर तुम मुझे मिले। और अब तुम मेरी सुन नहीं रहे हो।"

उस दिन भी कुछ नौकर जो उस कमरे के दरवाजे के पास बैठे थे सारी रात उसका यह रोना सुनते रहे। जब सुबह हुई तो उन्होंने

यह सब अपने मालिक से कहा तो उसने कहा कि उसको तो इस सबका पता ही नहीं चला।

तीसरी शाम उसने फिर से अपनी एक गिरी तोड़ी। अब यह उसकी आखिरी गिरी थी। इसमें उसके लिये पहले दो दिनों से भी ज़्यादा सुन्दर और कीमती पोशाक निकली। यह पोशाक सारी की सारी सोने के तारों के बुने हुए कपड़े की थी।

जब दुलहिन ने यह पोशाक देखी तो वह तो इसको खरीदे बिना नहीं रह सकी। उसने लड़की से फिर पूछा कि वह यह पोशाक उसको कितने की बेचेगी। लड़की ने फिर वही जवाब दिया कि उसकी कोई कीमत नहीं है सिवाय आज की रात आखिरी बार उसके दुलहे के कमरे में सोने के।

अब यह पोशाक तो इतनी सुन्दर थी कि दुलहिन ने उसको उस दिन भी उसे रात को अपने दुलहे के कमरे में सोने की इजाज़त दे दी।

पर आज की रात राजकुमार चौकन्ना था सो जब उस दिन उसको नींद लाने वाली शराब दी गयी उसने वह शराब नहीं पी और उसे फेंक दिया।

सो उस रात जब वह नौकरानी उसके कमरे में आयी और उसने रोना गाना शुरू किया वैसे ही राजकुमार कूद कर उठ खड़ा हो गया और बोला "तुम्हीं तो मेरी सच्ची पत्नी हो। तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ।"

और रात में ही दोनों एक गाड़ी में चढ़ कर वहॉ से भाग लिये। उन्होंने इस दूसरी लड़की के कपड़े भी ले लिये सो वह सुबह को उठ ही नहीं सकी।

जब वे बड़ी झील के पास आये तो वह झील उन्होंने नाव में बैठ कर पार की। और जब वे तेज़ धार वाली तीन तलवारों के पास आये वे उन्होंने हल के पहिये पर बैठ कर पार कीं। और जब वे शीशे के पहाड़ के पास आये तो उसमें उन्होंने तीन सुइयॉ घुसा दीं।

इस तरह से वे उस पुराने घर के पास आये पर जब वे उसके अन्दर गये तो वह तो एक बहुत बड़ा किला था। उसमें रह रहे मेंढकों का भी जादू टूट गया था। वे सब मेंढक नहीं बल्कि एक राजा के बेटे थे और अब वे सब बहुत खुश थे।

वहॉ शादी का उत्सव मनाया गया। राजा का बेटा और राजकुमारी दोनों वहीं किले में ही रहे जो उन दोनों के पिताओं के किलों से भी बहुत बड़ा था।

राजकुमारी के पिता को बहुत अकेला महसूस होता था सो बाद में वह उन लोगों को अपने पास ही ले आया। अब उनके पास दो राज्य थे और फिर वे बहुत सालों तक खुशी खुशी रहे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html
19 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**